श्री त्रिपुरसुन्दर्यै

जगद्गुरु शंकराचार्य कृत

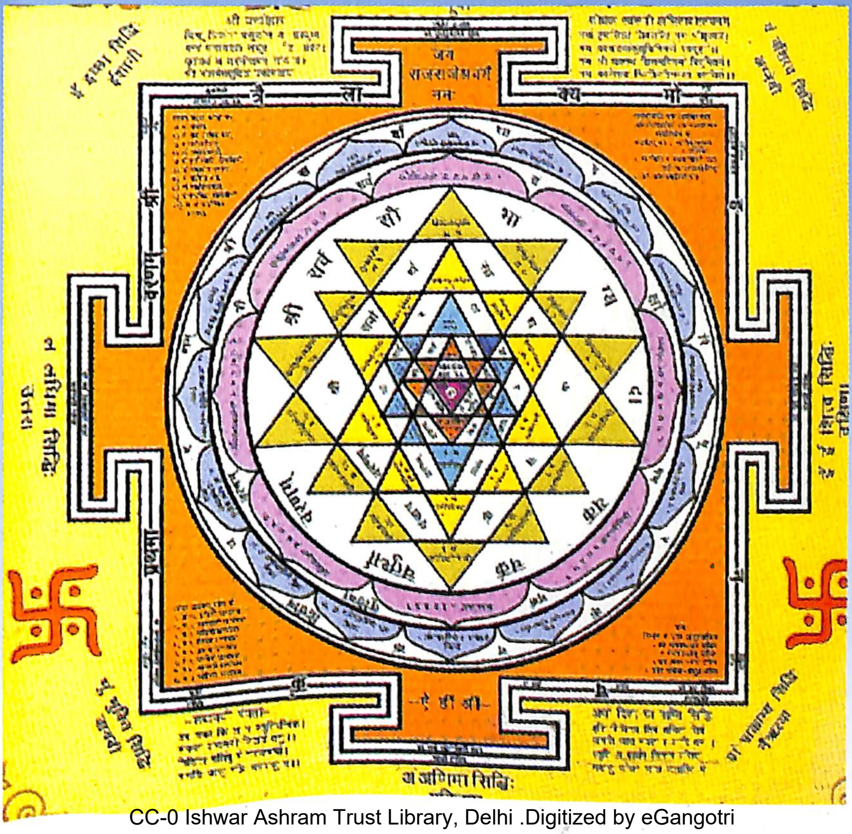
सौन्दर्य लहरी

कश्मीरी पद्यानुवाद हिन्दी टीका सहित

अनुवादक

प्रो० ओमकार नाथ च्रंगू

श्री चक्र



श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः

जगद्‌गुरु आद्य शंकराचार्य कृत

सौन्दर्य लहरी

कश्मीरी पद्यानुवाद तथा सरल हिन्दी टीका

अनुवादक

प्रो० ओमकार नाथ च्रंगू

श्रीचक्र यन्त्र



प्रकाशक

शोभा प्रकाशन

- 9419104787, 0191–2438676

E.mail: shoba_net@sancharnet.in

जगतगुरु आद्य शंकराचार्य कृत 'सौन्दर्य लहरी'
कश्मीरी पद्यानुवाद तथा सरल हिन्दी टीका

रूपान्तरकार : प्रो० ओम्कार नाथ च्रंगू

प्रकाशन वर्ष 2005

मूल्य : 25/–

अक्षर संयोजन : शोभा क्रियेशन्स, 217ए0, 7/7 नानक नगर,
जम्मू । दूरभाष : 0191–2438676

मुद्रक : बी.बी. ग्राफिक प्रिंटर, ई-49/8, ओखला फेस-2,
नई दिल्ली-110020 फोन : 41707666

प्रकाशक : शोभा प्रकाशन, जम्मू । – 9419104787,

मिलने का पता : **भगवानगोपीनाथजी आश्रम,**

- उदयवाला, बोड़ी जम्मू।
- वैखुरीयार हब्बाकदल, श्रीनगर
- पम्पोश एन्कलेव, दिल्ली ।

प्रस्तावना

विश्व विख्यात विचारक चिन्तक तथा अद्वैतवाद के प्रवर्तक दार्शनिक आद्य शंकराचार्य (8वीं शताब्दी ईस्वी) ने 'सौन्दर्य लहरी' की रचना की है। कश्मीर के तीर्थ–स्थलों विशेष कर शक्ति पीठों की यात्रा करते समय और देवी माँ के अद्भुत लावण्यमय शक्ति स्रोतों से प्रेरित–प्रभावित होकर शंकराचार्य को अपनी हठधर्मिता छोड़ कर शक्ति की महिमा और प्रतिष्ठा को स्वीकारना पड़ा । माता क्षीरभवानी और शारदा माँ के पवित्र धाम पर उपस्थिति देकर शंकराचार्य अभिभूत हो उठे थे। 'सौन्दर्य लहरी' कुण्डलिनी शक्ति और श्रीचक्र साधना का ज्ञान स्रोत है। ऐसा माना जाता है कि इस रचना के दो खण्डों हैं – 'आनन्द लहरी' और 'सौन्दर्य लहरी' । इन दोनों खण्ड़ों को मिला कर रचना का नाम 'सौन्दर्य लहरी' दिया गया है। 'आनन्द लहरी' के 42 और 'सौन्दर्य लहरी' के 61 श्लोकों को मिलाकर 103 श्लोकों की रचना ' सौन्दर्य लहरी' है। 'आनन्द लहरी' में अध्यात्म और सौन्दर्य लहरी में भौतिक सृष्टि के विराट पक्ष पर प्रकाश डाला गया है। ब्रह्म के आनन्द स्वरूप से 'सत्' में सौन्दर्य का आभास तथा सत्–चित् शक्ति में आत्मानन्द का भाव जाग्रत होता है। वस्तुतः शक्ति की आराधना का तात्पर्य ब्रह्म की आराधना ही है क्योंकि शक्ति का अस्तित्व शक्तिमान के अस्तित्व से पृथक नहीं समझा जाता। ब्रह्म की शक्ति ही शिवा है और शिव–शिवा में कोई भेद नहीं। अतः शिवा के गुण–वर्णन में शिव का गुण–वर्णन ही निहित है।

शैव अनुयायों का दृढ़ विश्वास है कि शक्ति के बिना शिव शव है। कश्मीर शैवमत के द्वितीय तत्त्व 'स्पन्द शास्त्र' पर ध्यान दीजिये, बात स्वतः स्पष्ट हो जाती है। वास्तव में शंकराचार्य महाराज को 'त्रिक् शास्त्र' का ज्ञानानुभव शारदा के शक्तिपीठ पर ही प्राप्त हुआ था।

कहा जाता है कि शारदा मन्दिर शक्तिपीठ के चार द्वार चार दिशाओं में स्थित थे। तीन द्वार तो सदा खुले रहते थे परन्तु दक्षिण दिशा में स्थित द्वार सदा बन्द रहता था । कारण यह था कि उस समय तक दक्षिण–भारत का कोई महापण्डित शारदा पहुँच कर शारदापीठ के विद्वानों को अपनी ज्ञान गरिमा से प्रभावित नहीं कर सका था। शंकराचार्य ने शारदा पहुँच कर इसी दक्षिण द्वार से मन्दिर–परिसर में प्रवेश किया और महापण्डितों की विभिन्न शंकाओं का समाधान करते हुए तथा अपने पाण्डित्य का प्रमाण देकर श्रेष्ठ विद्वानों, चिन्तकों और तत्त्व वेत्ताओं की पंक्ति में स्थान पा कर सुशोभित हुए थे।

शारदा से लौट कर ही शंकराचार्य शक्ति के अद्‌भुत स्पन्द स्रोत से प्रभावित हुए और 'सौन्दर्य लहरी' का निर्माण किया। वे प्रथम श्लोक में ही इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि शक्ति के बिना शिव जड़ है और शिव की शिवता (शिव कर स्वरूप, मंगलकारी स्वरूप) शक्ति के सौन्दर्य कणों से ही खिल उठती है :–

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितु–मपि ।
अतस्त्वा–माराध्यां हरि–हर–विरिन्चादिभि–रपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथ–मकृतपुण्यः प्रभवतिः ।।

कहते हैं शंकराचार्य कश्मीर में मण्डन मिश्र और आचार्य अभिनवगुप्त के आश्रमों में कुछ समय रहे हैं। 'सौन्दर्य लहरी' तंत्रशास्त्र की एक अनुपम रचना है। शंकराचार्य ने योग और उपासना की एकता को प्रत्यक्ष रूप से प्रतिपादित करते हूए कुण्डलिनी योग के महत्त्व को रेखांकित किया है। कुण्डलिनी योगाभ्यासी मणिपुर में अग्नि तत्त्व और स्वाधिष्ठान में जल तत्त्व का अनुभव करते हैं । 'सौन्दर्य लहरी' के उन्नतालीसवे और चालीसवे श्लोक को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि शंकर यहां तनिक उलझ गए हैं।

'सौन्दर्य लहरी' का अध्ययन करते समय मुझे ऐसा लगा कि विचारक शंकराचार्य की सौन्दर्यान्वेषी आँखें सर्वत्र अद्‌भुत को निहार रही हैं। कहीं–कहीं ऐसा आभास होता है कि शक्ति माँ का सौन्दर्य–चित्रण

भौतिक अथवा ठोस शारीरिक सौन्दर्य–वर्णन में उलझ गया है। मुझे नहीं लग रहा है कि शंकराचार्य शक्ति माँ के अद्भुत सौन्दर्य के साथ न्याय कर सके हैं। मांसल शरीर अंगों के चित्रांकन में शंकराचार्य महाराज शालीनता के बन्धन लाँघ चुके हैं। आलोचकों और तत्त्व वेत्ताओं को इस विषय में गहराई के साथ सोचना होगा। बात में कितना भी आध्यात्मिक अर्थ क्यों न निहित हो लेकिन बात कहते समय हमें ध्यान रखना होगा कि हम शक्ति माँ की चर्चा करते हैं किसी सामान्य पुष्पांगी सुन्दरी की नहीं।

लेकिन यह सत्य है कि ऐसे उदाहरण बहुत कम देखने को मिलते हैं।

'सौन्दर्य लहरी' की टीकाओं में पण्डित लक्ष्मीधर कृत टीका प्रधान मानी जाती है। इन्होंने लगभग 100 बीज मन्त्र, यन्त्र और अनुष्ठान–क्रम सविस्तार स्पष्ट किये हैं । व्याख्या ग्रन्थों में डा० रुद्र देव त्रिपाठी का व्याख्या–ग्रन्थ 'सौन्दर्य लहरी' पर्याप्त उपयोगी माना जाता है। हिन्दी भाषा में लिखित यह रचना सन् 2001 ई० में 'रजत प्रकाशन' दरियागंज, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है।

आज यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि प्रोफेसर ओमकारनाथ च्रंगू ने 'सौन्दय लहरी' का कश्मीरी और हिन्दी भाषा में पद्यानुवाद तैयार किया है। इस अनुवाद कार्य को पूरा करने के लिए च्रंगू साहब ने वर्षो साधना की है। निरन्तर प्रयास रत रहे हैं और आज साधनात्मक जीवन के इस वट–वृक्ष की छाँव (छांह) में आनन्दमय दिखाई देते हैं।

च्रंगू साहब कश्मीरी भाषा के एक वरिष्ठ कवि हैं। मुझे इनकी कई रचनाओं को कवि सम्मेलनों मे सूनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। कई रचनाएं पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। अध्यात्म, दिव्य शक्तियों एवं विशिष्ट धार्मिक उत्सवों से सम्बन्धित अंग्रज़ी भाषा में लिखे गए इनके लेख, जो विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं, काफ़ी चर्चित रहे हैं। वास्तव में उन पर भगवानजी की कृपा है और यह उन्हीं के आशीर्वाद का फल है कि आज आद्य शंकराचार्य की अद्भुत रचना का कश्मीरी पद्यानुवाद प्रस्तुत करने में उन्हें सफलता मिली है। वे भगवानजी के शिष्य

एवं परम भक्त एक साथ हैं। लेकिन मुझे दिया हुआ प्रण आज तक इन्होंने पूरा नहीं किया है।

आशा है पाठक समुदाय इस रचना से लाभान्वित होंगे और न केवल संस्कृत भाषा और साहित्य के पाठकों अपितु हिन्दी और कश्मीरी पाठकों और भक्तजनों को भी 'सौन्दर्य लहरी' के मूल कथ्य एवं तथ्य को समझने में सहायता प्राप्त होगी ।

मुझे विश्वास है कि पुस्तक–समीक्षा करने वाले विद्वान आलोचक बन्धु रचना के गुण – दोषों पर प्रकाश डालते हुए लेखक का मार्ग निर्देश भी करेंगे और उत्साह वर्धन भी।

तर्काश्रित प्रत्येक आलोचनात्मक टिप्पणी का स्वागत होना चाहिए क्योंकि स्वस्थ आलोचना परिपक्व लेखन की पहचान होती है।

इसी विश्वास के साथ ....

मई 31, 2005 **प्रो० (डॉ०) भूषणलाल कौल**

दो शब्द

हमारा सम्पूर्ण सांस्कृतिक इतिहास और प्राचीन साहित्य संस्कृत भाषा में निबद्ध है। सर्वसाधारण जन–समाज आज संस्कृत से दूर होता जा रहा है। इसी कारण संस्कृत रचनाओं का हिन्दी अथवा अन्य किसी भारीतय् भाषा में अनुवाद करके प्रस्तुत करने की आवश्यकता महसूस हो रही है। कई विद्वानों ने आज तक 'सौन्दर्य लहरी' की रहस्यपूर्ण व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं। कश्मीर के एक वरिष्ठ विद्वान पण्डित हर भट्ट शास्त्री ने भी 'सौन्दर्य लहरी' का एक भाष्य प्रकाशित किया है।

मातृ भाषा हर एक व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करती है। इसी कारण कई भक्त जनों के अनुरोध पर मैंने 'सौन्दर्य लहरी' का सहज और सरल पद्यानुवाद प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। इस स्तोत्र –रत्न को कश्मीरी विस्थापितं पण्डित समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने का मैंने सोद्देश्य प्रयास किया है ताकि आतंकित जन समाज इस संकट काल में भी अपनी स्वस्थ परम्परा, विश्वास और मान्यताओं के साथ दृढ़ता के साथ जुडा रहे। हिन्दी भाषा–भाषियों के लिये हिन्दी भाषा में सरल भावार्थ प्रस्तुत किया गया है साथ ही अन्य रहस्यपूर्ण तथ्यों का स्पष्टीकरण करने का प्रयास किया गया है। इस महत्त्वपूर्ण अनुवाद कार्य में मेरे विद्या गुरु स्वर्गीय जानकीनाथ कौल 'कमल', शैवशास्त्री डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित तथा स्वगीर्य दीनानाथ शास्त्री 'यक्ष' और प्रो0 मखनलाल जी कुकिलू ने मेरा मार्गदर्शन किया । इन सब महानुभावों का आशीर्वाद मेरे लिये संजीवनी सिद्ध हुआ है। मैं इनका अनुगृहीत हूँ ।

भगवान गोपीनाथजी के भक्त श्री राजेन्द्र जी कम्पासी ने कम्प्यूटर कम्पोज़िंग में शुद्ध लिपि निकाल कर सराहणीय कार्य कर, जो पुस्तक को आप तक सुन्दर छाप कार्य में मेरी सहायता की मैं उनका आभारी हूँ । भगवान गोपीनाथजी ट्रस्ट के प्रधान तथा ट्रस्ट के भक्त मित्रों, जिन्होंने

मेरा उत्साह वर्धन किया उनका भी सदा आभारी रहूंगा ।

इस रचना को सन्तुलित अभिव्यक्ति प्रदान करने में मेरे परम मित्र और हितैषी भगवान गापीनाथजी 'बॅब जी' के भक्त प्रोफेसर (डॉ0) भूषणलाल कौल का योगदान पर्याप्त लाभदायक सिद्ध हुआ । डॉ0 कौल ने सफलता पूर्वक मार्गदर्शक की भूमिका निबाही ।

'सौन्दर्य लहरी' का यह कश्मीरी पद्यानुवाद जगद्गुरु भगवान गोपीनाथजी महाराज के अपार अनुग्रह से ही सम्भव हो सका है।

अतः इस रचना को उन्हीं के प्रति अर्पित कर रहा हूँ।

श्रद्धा सुमन स्वीकारो बॅब जी
जन्म सफल हो जायेगा
बिगडी बात बना लो बॅब जी
हृदय कँवल खिल जायेगा ।

जम्मू
31 मई 2005 ई०

प्रो0 ओमकार नाथ च्रंगू

ध्यान

ओं श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः

तेंमि आदि शंकरन शन्कराचार्यन
ज़ॊंगि यलि शक्ती कॅरॣन यि भखती
मोख्वॅ द्रायि वॊनी तस ही भवॊनी
थर्नु पेयि यि आनन्द सुन्दर्य् लहरी
ग्वरॖ अनुग्रह युस यि कॉशुर अनुवाद
पॅरि प्रावि चानि भखती हुन्द प्रसाद
अस्य अवय गुलि गण्डिथ छिय प्यवान चेय परन
गछ़ प्रसन्न ॲसि कर अज्ञान दूर
माता गछ़ प्रसन्न असि कर अज्ञान दूर

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितु–मपि।
अतस्त्वा–माराध्यां हरि–हर–विरिन्चादिभि–रपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथ–मकृतपुण्यः प्रभवतिः 1

हे दवी ! शक्ति से सम्पन्न हो कर ही शिव स्पन्दित[1] होने के योग्य बन जाता है, शक्ति का साथ न होने से वह इकार–रहित शव होता है। आप हरि, हर तथा ब्रह्मा की भी आराध्य हो। आप की स्तुति किसी पुंण्य न करने वाले पुरुष से से कैसे हो सकती है – हे देवी आप को प्रणाम हो।

शिव, शक्ती रोसॅ न हलुॅ डलॅ हय्कान क'रिथ
स्पन्द रोसॅ ई रो'स शव बासवुन
शिव–शक्ती सोस छु ज़गतन व्यकास दिवान
ब्रह्मा वेशॅन–रुद्र ति चे़यॅ पूज़ करान
यिमन ज़न्मॅ ज़न्मन हन्दि पोॅन्य छि सन्चे़थ
तिमय बाग्यवान हय्कान चे़ अस्तुती करिथ ।
असि अवय गुलि गण्डिथ छिय प्यवान चे़य परन
गछ़ प्रसन्न असि कर अज्ञान दूर –
माता, गछ़ प्रसन्न असि कर अज्ञान दूर ।।

1. सृष्टिं – रचना

तनीयांसं पांसुं तव चरण–पङ्केरुह–भवं
विरिंचिः संचिन्वन् विरचयति लोकानविकलम् ।
वहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्रेण शिरसां
हरः संक्षुद्‌यैनं भजति भसितोद्‌धूलन–विधिम् 2

तुम्हारे चरण कमलों से उत्पन्न छोटे से रजकण को लेकर ब्रह्मा लोक–लोकान्तरों की रचना करते हैं। फिर उसे सहस्र शिरों वाला शेषनाग धारण कर सँभालता है और विलय पर शिव उसको भस्म करके, उस भस्म को अपने अंग–अंग पर मलते हैं।

चानि पादि कमल तलुँ गरिदि मोइँ माता
ब्रह्मा करान छु रचना ज़गतन
सासुँ कलॅ दॉरी शीशनाग माता
अथ–रॅटिथ वेशॅणुं रूपॅ पालना करान
प्रलयुँ विज़ि रुद्रॅ रूपुँ शिव ॲथि बसम करान
सुय बस्म मॅलिथ बनान सु बस्मादर –
अंसि अवय गुलि गण्डिथ छिय ....

अविद्याना–मन्त–स्तिमिर – मिहिर–द्वीप–नगरी
जडानां चैतन्य–स्तबक–मकरन्द–स्रुतिझरी।
दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका जन्मजलधौ
निमग्नानां दंष्ट्रा मुररिपु–वराहस्य भवति 3

हे दवी, आप अविद्या में पडे लोगों का अन्धकार दूर करने के लिए ज्ञान–रूपी सूर्य हो। जड़ जीवों के लिए ज्ञान रूप चेतन–गुलदस्ते से निकलने वाले मकरन्द के स्रोतों का ज्ञान रूप हो। दरिद्रों के लिए चिन्तामणि माला रूप हो। जन्म–मरण रूपी भवसागर में डूबे हुए जीवों का वराह भगवान के दाँत के समान उद्धार करने वाली हो।

चॉञ पाद छि अज्ञान कासुँवुन बासकर
पो'श गोंद मुशकुँ–आरुँ मूडता चटान
हाजतमंदन लाचारन दरिद्रन
चिन्तामणि रतनुँ सम्पदा दिवान
भवसरु ज़ेतॅ मरुँ भय यिम व'लिमुॅत्य
तिमन वराह–दन्त वोशनुँ रूप छख रछान ।
असि अवय ...

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगणः
त्वमेका नैवासि प्रकटित–वराभीत्यभिनया ।
भयात् त्रातुं दातुं फलमपि च वांछासमधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ 4

हे शरण देने वाली ! तुम्हारे अतिरिक्त सभी देवगण हस्त–संकेतों से अभय तथा वरदान देते हैं। पर आप ही एक ऐसी हो जो हस्त संकेत नहीं करतीं। अपितु शरणागतों को भय से त्राण और इच्छित फल प्रदान करने में आप के चरण ही निपुण हैं।

चे़ रॉस सॉरी दिवता़ छि ही माता
अथुँ तुलिथॅय अभय तुँ वरदान दिवान
मगर चुँ अख छख अथुँ अङ्ग मुद्राय रोसॅ
भय हरान तुँ शरनागतन वर दिवान
कारण छु बस मॉजि चरनॅ कमलन तल
चान्यन छु बखत्यन पुज़ॅनुँ प्येठ बनान ।।
असि अवय ...

हरिस्त्वामाराध्य प्रणत–जन–सौभाग्य जननीं
पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभ–मनयत्।
स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयन–लेहयेन वपुषा
मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महताम् ॥ 5॥

एक समय प्रणत पुरुषों के लिए विष्णु ने आपकी आराधना की और मोहिनी रूप धारण करके हितकारी बने, उस मोहिनी स्वरूप पर त्रिपुरारि शिव भी मोहित हो गये और कामदेव भी रति रूंप में ध्यानाकर्षित हुए। महानात्मा मुनिजनों के अन्तःकरण में भी मोह उत्पन्न हुआ।

मोहनी स्वरूप–स्वभाग्य जननी माता
नारायणनुँ ति दोर सु मोहनी स्वरूप
युस महादीव शिव छु मुँह रॅस माता
अथ स्वरूपस ब्रम्यव तुँ आव व्वलसुँनस
कामदीव ति ध्यान चोन रति रूप साधान
अदुँ कम कम, रेशॅ ति मूहित गछ़ान ॥
असि अवय ...

धनुः पौष्पं मौर्वी मधुकरमयी पन्च विशिखाः
वसन्तः सामन्तो मलयमरु–दायोधन–रथः ।
तथाप्येकः सर्वं हिमगिरिसुते कामपि कृपां
अपांगात्ते लब्ध्वा जगदिदि–मनङ्गो विजयते 6

पुष्प निर्मित धनुष, मधुकर–डोरी, शब्द–स्पर्श–रूप रस–गन्ध यही पांच उसके बाण, वसन्त ही सबल आयु, मलयगिरि शीतल सुगन्धित वायु उसका रथ और स्वयं शरीर–रहित – अनंग ऐसे ही आयुधादि लेकर वह सम्पूर्ण संसार को जीत लेता है। हे देवी उसका यह सारा सामर्थ्य आपकी अल्प कृपा–दृष्टि का फल है।

असतुॅर शस्तुॅर व्यॅखॅति कामदीवस
पोशुॅ तीरकमान तुॅ मॉछ–बोम्बुॅरॅ – लॉनॅ, तार
पांछ तीर, वाँस वसन्त, मलयगिर वाव् छु रथ
काया शरीर न केंह न आकार ति कांह
हि हिमालॅ पुत्री ॲकि दायायि द्रष्टि
बॅन्यव बलवान करिन ज़गत मूहित।।
असि अवय ...

क्वणत्कांची–दामा करिकलभ–कुंभ–स्तन–तनां
परिक्षीणा मध्ये परिणत–शरच्चन्द्र–वदना ।
धनु–र्बाणान् पाशं सृणिमपि दधाना करतलैः
पुरस्ता–दास्तां नः पुरमथितु–राहो–पुरुषिका 7

नाजुक कमर और उसमें घूँघरू लगा कमर बन्द, उभरे हुए कुम्भ समान भारी स्तनों के कारण झुकी पूर्णिमा के चन्द्र समान मुखारबिन्द, चार हाथों में बाण, पाश और अंकुश लेकर शिव की प्रिया महामाया शक्ति रूपा हमारे ध्यान में सदा प्रकट रहे।

ॲव्युल कमर तथ रो'ञि वज़ान कमरबन्द
हॅसि आयि वछॖबारॖ नमिथॅय चॖ मॉजि
पुनिम चन्द्रमॅ ह्युह शूबवुन मुखारबे'न्द
दनुष, बाण, पाश, अंकुश चतुर बोज़ॅन
छम मे' अबिलाशा ही त्रिपुरसुन्दरी
अमिय रूप रोज़तम सदा सनिधान ।।
असि अवय ...

सुधासिन्धो–र्मध्ये सुरविटपि–वाटी–परिवृते
मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणि–गृहे।
शिवाकारे मञ्चे परमशिव–पर्यङ्कनिलयां
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्द–लहरीम् 8

हे जगत माता तुम्हारा आसन अलौकिक है। अमृत सागर के मध्य, कल्पवृक्षों से भरे मणिद्वीप के चारों ओर चिन्तामणियों से निर्मित गृह में त्रिकोणाकार मंच पर, परम शिव रूपी पीठ पर विराजमान चिदानन्द स्वरूपिणी हो। कोई विरले पुरुष ही ऐसे स्वरूप का भजन स्मरण करते हैं। वही ध्यानी धन्य हैं।

चोन आसन अलौकिक ज़गतमाता
खीर सागरस मंज़ सदाशिव चे़ पीठ
चिन्तामनि रतन तुॅ कल्पवृक्ष अन्दि अन्दि
ऑथि मोखत लॉन्कि मंज़ चुॅ शूबायिमान
यिम बखति अमीय रूपुॅ ध्यान चोन छिय दरान
तिमन भाग्यवानन छु जय जयकार ॥
असि अवय ...

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुत–माकाश–मुपरि
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्वा कुलपथं
सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे 9

कुण्डलिनी शक्ति रूप आप मूलाधार में भू तत्त्व को, मणिपुर में जल तत्त्व को, स्वाधिष्ठान में अग्नि तत्त्व को हृदय अनाहत में वायू तत्त्व को और उसके ऊपर विशुद्ध चक्र में आकाश तत्त्व को और फिर भ्रूमध्य में मन को भेद कर सुष्मना तथा शक्ति मार्ग कुल पथ से सहस्रार पदम में अपने पति के साथ विहार करती हो, हे कुण्डलिनी शक्ति आप को मेरा नमन हो।

पृथवी तत्त्व मूलादारस प्यठ
ज़ल मणिपुरॅ, स्वाधिष्ठान ॲग्न
वायू अनाहतस आकाश विशुद्धस
मन भ्रूमध्य, यिथुॅ यि शक्ती पकान
सुषमनायि मॅन्ज़ि सहस्रारस वॉतिथ
शिव म्युल सपदान आनन्द लबान।
असि अवय ...

सुधाधारासारै–श्चरणयुगलान्त–र्विगलितैः
प्रपंचं सिन्चन्ती पुनरपि रसाम्नाय–महसः ।
अवाप्य स्वां भूमिं भुजग–निभ–मध्युष्ट–वलयं
स्वमात्मानं कृत्वा स्वपिषि कुलकुण्डे कुहरिणि 10

हे कुण्डलिनी शक्ति, सहस्रार में आपके दोनों चरणों से प्रवाहित अमृत धारा सारे प्रपंच को सींचती हुई छः चक्रों को अमृत वर्षण करके चन्द्रमा समान शीतलता प्रदान करती हुई फिर अपने मूलाधार, अपनी भूमि में सर्पिनी के समान साड़े तीन कुण्डल लगाकर इसी कुल कुण्ड में शयन करती हो।

पादि कमलन हॅन्दि अमृत सगविथ
सासबोंज़ुँ नाडी तुँ सोरूय प्रपंज़
अमॅृतॅ वरशुन चन्द्रम शेहजार
शन चक्रॅन ति अमृतॅ वरशान
अदुँ सुषमनायि व'ति मूलादारस
र'टिथ साड त्रे वर बे'यि शान्त रोज़ान ।।
असि अवय ...

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि
प्रभिन्नाभिः शंभोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः।
चतुश्चत्वारिंशद्-वसुदल-कलाश्र-त्रिवलय-
त्रिरेखाभिः सार्धं तव शरणकोणाः परिणताः 11

हे माँ त्रिपुरसन्दरी – चार श्रीकण्ठ, शिवात्मक, उध्र्वमुख शिवत्रिकोण, और पांच अधोमुख, शक्त्यात्मक, शक्ति त्रिकोण, इन नौ मूल प्रकृतियों से तुम्हारे निवास रूप श्रीचक्र के चवालीस त्रिकोण बनते हैं। यह शम्भू के बिन्दुस्थान से पृथक है तथा तीन वृत्तों और तीन रेखाओं सहित अष्ट और षोडश दलों से युक्त हैं। इसी प्रकार आपके प्रत्यक्ष निवास रूप श्रीचक्र का निर्माण होता है। यही तुम्हारा निवास स्थान तथा ध्यान का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है।

1. पाठभेद – त्रयश्चुत्वारिंशद् (43)

चो़र शिव तुॅ पांछ़ शक्ति त्रिकून मिलॅविथ
यिमय नव छि मूल प्रकृति आसवॅनि
यिमव ब्योन छु मंज़स बेन्दॅ स्यान शम्भू
चे़ पम्पोश ज़् आ'ठ बे'यि शुराह व'थरव
त्रे गोलाकार तुॅ त्रन रेखायन मंज़
यिथुॅ चा़यतॉजी त्रिकून चे़ आसन
ही त्रपुरसुन्दरी यहय बनान छु श्रीच़क्र
चोन निवास तुॅ चानि ध्यानुक बोडॅ स्वरूप।
असि अवय ..

त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरिकन्ये तुलयितुं
कवीन्द्राः कल्पन्ते कथमपि विरिञ्चि–प्रभृतयः
यदालोकौत्सुक्यादमरललना यान्ति मनसा
तपोभि–र्दुष्प्रापामपि गिरिश–सायुज्य–पदवीम् 12

हे महाशान्ति स्वरूपा हिमराज कन्या ! आपके सौन्दर्य की तुलना करने को ब्रह्मा आदि महाकवि बस कल्पना ही कर सकते हैं; यह वर्णन से परे है। इस सौन्दर्य को देख कर देव–ललनाएँ भी विचार मग्न हो जाती है और शिवमय स्वरूप के ध्यान की तलाश में रहती हैं। हे माता ! यह शिवमय सौन्दर्य छवि सहस्रार साधना के माध्यम से ही साधकों को प्राप्त होती है ।

ही हिमालपुत्री चानि सुन्दरतायि
छु नुँ ब्रह्मा ति कलपना ह्यकान कॅरिथ
दीव ललनायि सुन्दरतायि वुॅछि वुॅछि
शिवमय स्वरूपुक ध्यान छ़ांडान
यि सुन्दरता छि शिवमय चॉनि माता
सहस्रार साधनायि साधकन बनान ।।
असि अवय ...

नरं वर्षीयांसं नयनविरिसं नर्मसु जडं
तवापांगालोके पतितः–मनुधावन्ति शतशः।
गलद्वेणीबन्धाः कुचकलश–विस्रस्त–सिचया
हटात् त्रुट्यत्काञ्च्यो विगलित–दुकूला युवतयः 13

हे कुण्डलिनी स्वरूपा शक्ति माता, आपकी दया दृष्टि से वृद्ध, कुरूप, असमर्थ, जड़मति भक्त भी ऐसा मोहक, तेजोमय बन जाता है कि सैंकड़ों सुन्दरियाँ उसके पीछे दौड़ती हैं। उनके अंग बन्धन ढीले पड़ जाते हैं। हे कुण्डलिनि शक्ति त्रिपुर सुन्दरी तुम्हारे अनुग्रह से ही काया वश में आ सकती है। (यहां ई बीज के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है)।

वृद्ध कुरुप सामर्थ रो'स कांह आ'सितन
अकि दयायि द्रष्टि सु तीज़मय बनान
गूपी सासॅु–बॅजॅु पत तस लारान
अङ्ग–अङ्ग बन्धन छिख व्यसरान
ही कुण्डलिनी शक्ति त्रपुरसुन्दरी
यि वश–काया छि चानि अनुग्रॅह बनान ।।
असि अवय ...

क्षितौ षट्पञ्चाशद्–द्विसमधिक–पञ्चाश–दुदके
हुताशे द्वाषष्टि–श्चतुरधिक–पञ्चाश–दनिले ।
दिवि द्विःषट्त्रिंशन्–मनसि च चतुःषष्टिरिति ये
मयूखा–स्तेषा–मप्युपरि तव पादांबुज–युगम् 14

हे ज्योतिर्मयी माँ, आप श्री के चरण कमल केन्द्र बिन्दु के 360 कला (मयूखाओं) के भी ऊपर हैं। इनमें 56 पृथ्वी के 52 जलात्मक, 62 अग्नि की, 54 अनिलात्मक वायु के 72 आकाश की तथ 64 शिखायेंमन की। इन सम्पूर्ण 360 जीवनात्मक तथा सृश्टयात्मक कलाओं से परे ब्रह्मरन्ध्र में सहस्रार के ऊपर आपके चरणकमल विराजमान हैं।

श्रीचक्र आदार, शक्ति कण, कलायि यिम
प्रथवी शिवन्ज़ांह(56) दुवन्ज़ांह(52) ज़ॅलस
अग्नी दुहॉ्ठ(62) तुँ वायूस छिय चुवन्ज़ांह(54)
आकाशस दुस्तथ(72) मनस चुहॉठ (64)
चॉनि पादॅ कमलुँ ज़ूरि यिमव अपोर छि माता
सहस्रार बेन्दुँ ब्रह्माण्ड सगवान ।।
अंसि अवय ...

शरज्ज्योत्स्ना–शुद्धां शशियुत–जटाजूट–मकुटां
वर–त्रास–त्राण–स्फटिकघुटिका–पुस्तक–कराम्।
सकृन्न त्वा नत्वा कथमिव सतां सन्निदधते
मधु–क्षीर–द्राक्षा–मधुरिम–धुरीणाः फणितयः 15

हे ज्ञान दायिनी माँ, शरद पूर्णिमा श्वेत वर्ण वाली माँ, शिर पर शान्ति सूचक–चन्द्र मुकट धारी महामाया रूप जटाजूट वाली, दो हाथों से अभय तथा वरदान मुद्रा धारण किये हुए और दूसरे दो हाथों में पुस्तक तथा स्फटिक–माला लिये हे माँ, आपके इस स्वरूप का ध्यान और नमन न करने वाला कैसे श्रेष्ठ कवियों के समान मधु, क्षीर, जैसी माधुर्य कविता (अस्तुति) कर सकता है। हे माँ ! तुम्हारा मुखारबिन्द कार्तिक पूर्णिमा की धवलता और शुभ्रता से सुशोभित है।

कारतिक पुनिम ह्युह प्रकाशमान मुखारब्यंद
द्वयि हुन्द चन्द्रॅ कला जटा जूटस
ज़ॅ अथुॅ अभय वरदान मुद्रा द'रिथ
बे'यन द्वन छि पुस्तक तुॅ स्वठ़क मणिमाल
युस नुॅ यिथि स्वरूपुक ध्यान दरि, नमन कॅरि
कति वुज़ि तस मधुर–मीठ वा'णी ॥
असि अवय ...

कवीन्द्राणां चेतः–कमलवन–बालातप–रुचिं
भजन्ते ये सन्तः कतिचिदरुणामेव भवतीम् ।
विरिञ्चि–प्रेयस्या–स्तरुणतर–श्रृञ्गारलहरी–
गभीराभि–र्वाग्भिर्विदधति सतां रञ्जनममी 16

हे विद्या की देवी माँ, जो कवि–श्रेष्ठ अपने हृदय के कमल वन को विकसित करने वाली आप बालसूर्य अरुणामयि मूर्ति का ध्यान तथा स्मरण करते हैं तुम्हारा स्वरूप सूर्योदय की स्वर्ण आभा लिये मन के पद्म उपवन को प्रफुल्ल बना देते हैं। उनके द्वारा ब्रह्मा की प्रिया सरस्वती की तरुणतर श्रृंङ्गार लहरी से निर्गत गम्भीर सुन्दर कविताएँ सज्जनों का मनोरंजन करने वाली होती हैं। यही तुम्हारे दिव्य स्वरूप का प्रसाद साधकों को उपलब्ण होता है।

व्वदयुक सिर्य ह्युह सोनसुन्द स्वरूप चोन
मनुँकि पम्पोश बाग छु फो'लरावान
मोखँ वुज़ान छि कवियन गदगदवा'नी
व्यदवान गछ़ान हर्शस व्यकास लबान
ज़न छि ब्रह्मा सन्ज़ु सरस्वती वनवान
यि चानि अमि स्वरूपक छु साधकन प्रसाद ।।
असि अवय ......

सवित्रीभि–र्वाचां शशि–मणि–शिला–भङ्ग–रुचिभि–
र्वशिन्याद्यभि–स्त्वां सह जननि संचिन्तयति यः।
स कर्ता काव्यानां भवति महतां भङ्गिरुचिभि–
र्वचाभि–र्वाग्देवी–वदन–कमलामोद–मधुरैः 17

सावित्री सहित वशिनी आदि अष्ट शक्ति वाग्देवियां चन्द्रमणि शिला से निर्मित शोभामयी जननी, जो आपका इस प्रकार से सजित विश्व जननी रूप का चिन्तन करता है, वही आनन्दित हो जाता है और उसी के मुख से अद्भुत कविता जन्म लेती है मानो वाग्देवी स्वयं स्तुति पाठ कर रही हो।

चन्द्रकान्त रतनँ सोव्स गॅरॅमॅच़ ज़ोतवॅन्य
वशनी ह्यथ चे़ ऑठ वाकदीवी
ही त्रपोरसुन्दरी युस युथ ध्यान रॅटि
चोन सरस्वती रूप साधनायि मंज़
सुय फोव्लि तस नेरि मोव्खॅ तिछ़ कविता
ज़न पानुॅ सरस्वती आसि वनवान ।।
असि अवय ...

तनुच्छायाभिस्ते तरुण–तरणि–श्रीसरणिभि–
र्दिवं सर्वा–मुर्वी–मरुणिमनि मग्नां स्मरति यः ।
भवन्त्यस्य त्रस्य–द्वनहरिण–शालीन–नयनाः
सहोर्वश्या वश्याः कति कति न गीर्वाण–गणिकाः 18

उर्वशी तथा स्वर्ग की अति सुन्दर अपस्रायें अपने मृग नयनों से जाने किन–किन को अपने वश में करती हैं। उन साधकों के चारों ओर गत करती हुई नमन करती हैं जिन के ध्यान में तुम्हारा यह स्वरूप विद्यमान रहता है। तुम्हारा यह स्वरूप उदित होते सूर्य सदृश, अनार पुष्प के समान आभा युक्त तथा केसरी रंग में शोभायमान पृथ्वी और स्वर्ग को रसमय बना देती है।

उर्वशी तुँ सुन्दर स्वर्ग् अफसराय यिम
हरणुँ चेशुँमव करान कमन कमन वश
गथ करान नमन क्रान तिमन तिमन साधकन
यिमन सु चोन स्वरूप आसि ध्यानस मंज़
धॉन पोश तुँ कोन्ग रंगुँ खस्वुन सिर्य ह्युह
प्रथवी तुँ स्वर्गस रसमय करान ।।
असि अवय ...

मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमध-स्तस्य तदधो
हरार्धं ध्यायेद्यो हरमहिषि ते मन्मथकलाम् ।
स सद्यः संक्षोभं नयति वनिता इत्यतिलघु
त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दु-स्तनयुगाम् 19

हे त्रिलोक सुन्दरी! जो साधक मन्मथकला आकृति में आपके श्रीमुख को एक बिन्दु, नीचे स्तन दो बिन्दु, उसके नीचे के भाग को शिवार्द्ध रूप जानकर ध्यान करें उसके लिये किसी भी स्त्री को मोहित करना छोटी सी बात है वह तो तीनों लोकों को जिनके स्तन सूर्य चन्द्रमा है, को भी वश कर सकता है। अर्थात् मुमुक्षुजन आपके ध्यान में ही मग्न रहते हैं।

केन्द्र बिन्दु-मुखारबेन्द ध्यानस रॅटिथॅय
बोनुं ज़ॅ बेन्द वॅछ, पतुं र हरार्द रूप
अदुं ज़ेनि मनमथ कला यिमन बेन्दन प्यठ
ललनायि छ़ांडनस सुॅ नय व्यसरान
कॅरि ध्यानुं वश त्रेलोकि त्रिलोक-सुन्दरी
यथ सिर्य चन्द्रम वछ़ॅ ज़ोतान ।।
असिं अवय ....

किरन्ती–मङ्गेभ्यः किरण–निकुरुम्बामृतरसं
हृदि त्वा–माधत्ते हिमकरशिला–मूर्तिमिव यः।
स सर्पाणां दर्पं शमयति शकुन्ताधिप इव
ज्वरप्लुष्टान् दृष्ट्या सुखयति सुधाधार–सिरया 20

हे परमेश्वरी जो साधक अमृत रस रूपी रश्मि–समूह की वर्षा करने वाली त्रिपुरसुन्दरी का हृदय में ध्यान केन्द्रित करता है वह, जैसे गरुड, सर्पों के विष का शमन करता है वैसे ही सुधा धार वर्षिणी, नाडी के द्वारा, मात्र दृष्टि से हर प्रकार के ज्वर भय और ताप से मुक्त हो जाता है।

युस ध्यानुँ स्यद कॅरि चन्द्रमणि मोखतुँ ह्युह
हेरि बोनुँ अनुग्रह चुँ प्रवुँ त्रावान
तस हंज़ि दृष्टि मात्र सॉति ज़गत माता
गरुड रूप ज़न सोरफुँ विशमद शमान
अमृत वर्शवॅनि नॉडी स्वभाव किन्य
सु अकि नज़रि ज्वर, भय, ताप छुय हरान ।।
असि अवय ...

तटिल्लेख–तन्वीं तपन–शशि–वैश्वानर–मयीं
निषण्णां षण्णामप्युपरि कमलानां तव कलाम् ।
महापद्माटव्यां मृदित–मलमायेन मनसा
महान्तः पश्यन्तो दधति परमाह्लाद–लहरीम् 21

हे आनन्दमयी महाकला माँ, आकाश में चमकती बिजली के समान, सूर्य, चन्द्र अग्नि एवं मूलाधार से षटचक्रों के ऊपर सहस्रार में विराजमान, आप का प्रकाशमय स्वरूप मोह, माया से मुक्त मन वाले साधक ही देख सकते हैं। बस, वे ही परमानन्द की लहरी को धारण करते हैं।

वुज़मलुँ प्रकाश हिश शन कमलन पे'ठि
शिव म्युल–कलाचोन ज़ोतवुन स्वरूप
सिर्य चन्द्रम अग्नी शमरॉविथ
सहस्रदल पम्पोश डल चे़ आसन
यिमव मनुँ मुह माया आसि ज़ी'निमॅच़
तिमय बाग्यवान छि युथ दर्शुन लबान ।।
असि अवय ...

भवानि त्वां दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणां
इति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः
तदैव त्वां तस्मै दिशसि निजसायुज्य–पदवीं
मुकुन्द–ब्रह्मेन्द्र–स्फुट–मकुट–नीराजितपदाम् 22

हे करुणामयीं माँ, इस दास पर भी दया दृष्टि कीजिए ताकि मेरा ध्यान केन्द्रस्थ हो और मेरी वाणी सफल हो जाये। इस प्रकार की इच्छा करके साधक–भक्त अपने मुख से, 'भवानी त्वम्' (मैं तुम सा हो जाऊँ) इतना ही कह पाता है। उसी समय उसे सायुज्य पदवी प्रदान करती हो। उस पदवी को विष्णु, ब्रह्मा इन्द्र आदि नत मस्तक होकर आरती उतारते हैं।

कर दया दृष्टि गॅछ़ प्रसन्न भवा'नी
युथ मे' ध्यान द'रि गॅछ़ि स्यद्ध वॉणी
वासनायि छ़'नुँ गछ़न वॅनि' 'भवानी त्वम'
गछ़य्स म्युल पाद चॉञि बॅन्यस आसन
तिमनॅय साधकन तीज़ सो'सॅ ताजदार
ब्रह्मा वेशन, इन्द्र न्यथ नमन करन ।।
असि अवय .....

त्वया हृत्वा वामं वपु–रपरितृप्तेन मनसा
शरीरार्धं शंभो–रपरमपि शङ्के हृतमभूत् ।
यदेतत् त्वद्रूपं सकलमरुणाभं त्रिनयनं
कुचाभ्यामानम्रं कुटिल–शशिचूडालमकुटम् 23

हे जगदम्बे! लगता है शिव का वामाङ्ग हरण कर, आपने सन्तोष न मान कर उसका दक्षिणार्द्ध भी अपने दिव्य शरीर के अरुणाभ के कारण आपका ही दिखाई देता है। वह शरीर तीन नयन युक्त तथा कुच–भार से झुका सा है, और केशों पर द्वितीया का चन्द्रमा मुकुट के रूप में सुशोभित है। यही आपका शिवरूपिनी और शिव–शक्ति रूप है।

खोवुर ओ'ड शरीर रॅटुथ तस शंकरस
दॅछुन ओ'ड ति शक्तिमय तस बासान
त्रिनेत्र दॉरी तुँ वछॅ बारॅ ज़न नॅम्योमुत
द्वयिं' हुन्द चन्द्र ति सुमि प्यठ ज़ोतान
शिव शक्ति म्यॅुल सु अर्द्धनारेश्वर
यि शिव सायुज्य रूप छु शूबायिमान ।।
असि अवय ...

जगत्सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयते
तिरस्कुर्व–न्नेतत् स्वमपि वपु–रीश–स्तिरयति।
सदा पूर्वः सर्वं तदिद–मनुगृहणाति च शिव–
स्तवाज्ञा–मालम्ब्य क्षणचलितयो–र्भ्रूलतिकयोः 24

हे विश्व–विधायिन् माँ, ब्रह्मा विष्णु, रुद्र जगत की सृष्टि, पालन तथा लय करते हैं, तो सदाशिव 'ईश्वर' सब का संहार करके स्वयं को तटस्थ रखते हैं। फिर जब युग परिवर्तन होता है तो आपकी भ्रूलताओं के संकेत मात्र से फिर पुनरोत्पति का अनुग्रह करके ईश्वर नया प्रपंच रचते हैं।

ब्रह्मा छु व्युथपती करान हरि लल्वान
रुद्र रूपॅ सॉरिसॅय छु संहार करान
सु ईश अदुॅ सदाशिव रूपॅ अथ न्यंगलिथ
सारिसॅय छु पानुॅसॅय मंज़ लय करान
युॅग यलि फेरि मॉजि चानि भुम्बि इशारॅ ॲकि
अनुग्रह सु ईश बेयि नोव प्रपंज़ करान ।।
असि अवय ...

त्रयाणां देवानां त्रिगुण–जनितानां तव शिवे
भवेत् पूजा पूजा तव चरणयो–र्या विरचिता।
तथा हि त्वत्पादोद्वहन–मणिपीठस्य निकटे
स्थिता ह्येते शश्वन्मुकुलित–करोत्तंस–मकुटाः 25

हे शिवे, आपके चरणों की पूजा करने से आपके तीनों गुणों से सम्पन्न तीनों देवों की भी पूजा होती है। सतोगुण, रजोगुण तथा तमोगुण तीनों करबद्ध आपके रत्न जड़ित मौक्तिक प्रकाश युक्त पाद–पीठ के सम्मुख खड़े होकर अलौकिक तेज़ प्राप्त करते हैं।

चे़ पादॅ कलमन हॅज़ि पूज़ायि सॉतीय
त्रि–गुणॅ दीवन हॅन्ज़ ति पूज़ सपदान
यिमन हॅन्दि रजो गुण, सतोगुण तमोगुण
छि चानिव'य पादव तलॅु व्वपदान
रतनॅु मो'खतॅु ज़ोतवुन युस पाद–पीठचोन
गुल्य गण्डिथ यिम ति' तीज़ तॅति प्रावान ॥
असि अवय ...

विरिञ्चिः पञ्चत्वं व्रजति हरिराप्नोति विरतिं
विनाशं कीनाशो भजति धनदो याति निधनम् ।
वितन्द्री माहेन्द्री विततिरपि संमीलित–दृशा
महासंहारेऽस्मिन् विहरति सति त्वत्पति–रसौ 26

हे सति माता! प्रलय काल पर ब्रह्मा और विष्णु पंचमहाभूतों में विलीन हो जाते हैं, यमराज तथा कुबेर भी विनष्ट हो जाते हैं। सहस्रनेत्र महेन्द्र भी नेत्रों को बन्द कर लेते हैं, परतु आश्चर्य है कि आपके पति महाशिव ही जागते और लीला मग्न रहते हैं, यह आपके पतिव्रत का ही महात्म्य है।

ही सती माता प्रलय समयस प्य'ठ
ब्रह्मा वे'शन छु त्वतुॅनॅय लय गछ़ान
महाकाल तुॅ बेयि कुबेर ति मृत्यु प्रावान
सासुॅ न्यथॅरॅ महेन्द्र ति न्यथरन वटान
आश्चर्य माता, चे़ शक्ति रूपॅ सा'मी
बस सुय सदाशिव छु लीला करान ।।
असि अवय ...

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
मतिः प्रादक्षिण्य–क्रमण–मशनाद्याहुजित–विधिः।
प्रणामः संवेशः सुखमखिल–मात्मार्पण–दृशा
सपर्या–पर्याय–स्तव भवतु यन्मे विलसितम् 27

हे माँ! मेरी वाणी, मन्त्र–जप के समान, तथा शरीर का अंग अंग आपके प्रति कर्मकाण्ड रूप व्यवहार रत हो, भोजनादि हवन प्रकार आहुति हों, शयन, प्रणाम के समान हो, सभी सुखों के उपभोग में आत्म समर्पण की अवस्था तथा मेरा विलास तुम्हारा ही पूजन–क्रम होना चाहिए। हे त्रिपुरसुन्दरी ! साधकों का प्रत्येक कर्म आपके प्रति अर्पित रहता है और वे मनसे सदा आप की पूजा करते रहते हैं।

वानी यिछ़ ज़न मन्त्रन हुन्द ज़फ'
नॅरि ज़ङ्गुँ अंग' कर्मकांड वरतान
फेरुँ थोर चे' प्रॅकरम, ख्यन हवन आहुती
शॉन्गुन प्रणाम मुद्रा सोखॅ चे' अरपन
साधकन प्रथ क्रिया ही त्रिपुर सुन्दरी
छि आसान मनुँ चॉजि पूज़ायि क्रम ।।
असि अवय ...

सुधामप्यास्वाद्य प्रति–भय–जरामृत्यु–हरिणीं
विपद्यन्ते विश्वे विधि–शतमखाद्या विविशदः।
करालं यत् क्ष्वेलं कबलितवतः कालकलना
न शम्भोस्तन्मूलं तव जननि ताटङ्कमहिमा 28

हे ताटङ्क शोभित माँ! ब्रह्मा इन्द्र आदि देवगण अमृत पान करके भी काल क्वलित तथा मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। परन्तु हलाहल विष पान कर लेने पर भी सदाशिव सदा अविनाशी तथा कालातीत रहते हैं, इसका कारण है कि तुम्हारे कानों में सौभाग्यवती होने का प्रतीक ताटङ्क (डेजिहोर) सुशोभित है । (प्रत्येक नारी को यह ताटङ्क (डेजिहोर) सौभाग्यशाली बना देता है।)

अमर अमृत च्यथ ति ब्रह्मा दीवगण
प्रलयँ विज़ि तिम ति कॅरि कालन ग्रास
हलाहल ज़हर चॅथ ति शंकर सॉमी
रूद अजर अमर सदा काल निश अपोर
कारण कॅनन चे' डे'कॅ बजरुक डे'जिहोरँ
प्रथ त्रियँ डेजहोरँ छु डेकॅ–बजर दिवान ।।
असि अवय ...

किरीटं वैरिञ्चं परिहर पुरः कैटभभिदः
कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जंभारि–मुकुटम् ।
प्रणम्रेष्वेतेषु प्रसभ–मुपयातस्य भवनं
भवस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्ति–विजयते 29

हे कुण्डिलिनी शक्ति माँ! आपके दरबार में ब्रह्मा इत्यादि देवगण नतमस्तक आपके प्रणाम में खड़े रहते हैं उसी समय भवन में शिव को आते देख, सेविकायें जय हो, जय हो पुकारते आपको सावधान करती हैं, तभी आप शिव के साथ एकाकार होने हेतु स्वागत को दोड़ती आगे बड़ती हो कि कहीं नतमस्तक मुद्रा में ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्र के मुकुटों के साथ ठोकर न लगे।

शिव यॅलि अकस्मात च़ाव चोन दरबार
सखियव ग्रज़ तुॅजि जय जयकार
वुज़म'लि टुॅकि द्रायि शक्ती कुण्डिलिनी
शिवस सॉत्य प्रावने ईकाकार
चेनॅवॅत्रि दिच़हस युथ नुॅ ठूकुर ल'गि
ब्रह्मा वेशण यन्द्रुॅ मुकटन सॉत्य ।।
असि अवय...

स्वदेहोद्भूताभि–र्घृणिभि–रणिमाद्याभि–रभितो
निषेव्ये नित्ये त्वा–महमिति सदा भावयति यः।
किमाश्चर्यं तस्य त्रिनयन–समृद्धिं तृणयतो
महासंवर्ताग्नि–र्विरंचयति नीराजन–विधिम् 30

हे जगत नित्ये ! आपके स्वरूप में, अणिमादि अष्ट सिद्धि–रश्मियाँ प्रज्वलित होती हैं जो महासाधक ध्यान में 'त्वाम् अहं' की भावना को धारण करते हैं, परमपद का आभास केवल उसे ही होता है, वह त्रिनेत्र शिव सिद्धि को भी तृण के समान समझता है और यदि प्रलयाग्नि भी उसकी आरती उतारे, तो कोई आश्चर्य नहीं।

ही ज़गत नित्ये' चॉ'निस स्वरूपस
अनिमादि अष्ट सिद्धि छि प्रज़लान
युस साधक ध्यानुँ अथ स्वरूपस र'टि
'अंह त्वाम' पदवी छि तस बास यिवान
त्रिनेत्र शिव सिद्धि तस नुँ टारि कंह खसान
प्रल्यॉअग्नि ति' तस छि' आरती करान ।।
असि अवय ...

चतु:षष्टयातन्त्रैः सकल–मतिसंधाय भुवनं
स्थितस्तत्तत्–सिद्धि–प्रसव–परतन्त्रैः पशुपतिः ।
पुनस्त्व–न्निर्बन्धा–दखिल–पुरुषार्थैक–घटना–
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितल–मवातीतर–दिदम् 31

हे सर्वसिद्धि दायिनी माँ! पशुपति शिव ने सम्पूर्ण भुवनों को अपनी–अपनी सिद्धियों के स्वरूप चौंसठ तन्त्रों से सुशोभित किया, आपको लगा कि यह सब व्यावहारिक हैं अतः आप श्री को सन्तुष्ट न देख कर, आपके आदेश पर ही, सर्वपुरुषार्थ एवं सिद्धियों के दाता 'श्री विद्या तन्त्र' को प्रकट किया जो भक्त जनों को धर्म, अर्थ और मोक्ष प्रदान करता है।

चुहॅंठव तन्त्रव ही सिद्धि दात्री
पॉरॉवि भुवन यिम पशुपति शिवन
बासेय यिम चैं व्यवहॉरी माता
हुकम' चानि चोन तन्त्रॅ यि बोवुन
श्री विद्या तन्त्र यि चोन पुरुषार्थ दिवान
भखत्यन धर्म अर्थ मूक्षॅ बखॅचान ।।
असि अवंय ...

शिवः शक्तिः कामः क्षिति–रथ रविः शीतकिरणः
स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परा–मार–हरयः ।
अमी हृल्लेखाभि–स्तिसृभि–रवसानेषु घटिता
भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम् 32

हे मंत्र सिद्धि दायिनी माँ ! शिव, शक्ति,काम, क्षिति पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र स्मर,. हंस, शक्र (इन्द्र) तथा पराशक्ति, मार और विष्णु, इन तीन कूटबीजों के साथ ह्रीं के योग से उपासक गण आपके पन्दराह (15) अक्षर मंत्र का भजन स्मरण करते रहते हैं। (यह तीन कूट अक्षर, ' क ए ई ल ह्रीं', ह स क ह ल ह्रीं, स क ल ह्रीं वर्ण के हैं। (पंचदशाक्षरी–गुरु अक्षर/शोडाशक्षरी)

ही त्रपोर सुन्दरी चे मंत्र–नाम रूप छुय
त्रेयिुं गुॅणॅ शब्द रूपॅ मिलविथ बनान
शिव, शक्ति, काम क्षिति, गोडन्युक पद अथ
सिर्य चन्द्रमॅ स्मर, हंस, श्क्र' द्वोयुम
त्रेयुम परा मार हरि तुॅ ह्रीं, यिमन मिलॅविथ
पंदाह अक्षरी मंत्र साधक जॅपान ।।
असि अवय ...

स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितय–मिद–मादौ तव मनो–
र्निधायैके नित्ये निरवधि–महाभोग–रसिकाः।
भजन्ति त्वां चिन्तामणि–गुणनिबद्धाक्ष–वलयाः
शिवग्नौ जुह्वन्तः सुनभिघृत–धाराहुति–शतैः 33

हे नित्ये ! आपके मंत्र के साथ पहले क्लीं ह्रीं श्रीं को जोड कर भोग–मोक्ष आनन्द की इच्छा वाले आपके साधक शुद्ध घी से शिवाग्नि में सैंकडों आहुतियों से चिन्तामणि मनक माला लिये जाप यज्ञ करते हैं। और उन्हें प्राप्ति इस प्रकार की होती है कि कुछ मांगने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती ।

केन्ह साधक यिम भोग मोक्ष बापथ
महा आनन्दँ मन्त्रुक ज़फॅ करान
क्लीं ह्रीं श्रीं मंत्रन बुथि मिल'विथ
निरन्तर शिवॅ अग्नि शोद्ध ग्यवॅ हुमान
चिन्तामणि ज़ॅप मालि तिम साधक
प्रावान त्यूत युथ नुँ मंगनुय प्यॅवान ।।
असि अवय ..

शरीरं त्वां शंभोः शशि–मिहिर–वक्षोरुह–युगं
तवात्मानं मन्ये भगवति नवात्मान–मनघम् ।
अतः शेषः शेषीत्यय–मुभय–साधारणतया
स्थितः संबन्धो वां समरस–परानन्द–परयोः 34

हे भवानी ! शिव शक्ति अथवा शक्ति–शिवा रूप – दोनों एक दूसरे के पूरक हैं आप ही शम्भू का शरीर हो, वक्षस्थल के दो स्तन सूर्य चन्द्रमा हैं, आप सम्पूर्ण भव की आत्मा शिवरूप में हो, आपके दिव्यदेह में परानन्द शंकर और परा–शक्ति है, आप एक दूसरे के पूरक हैं, इसमें सन्देह नहीं। आप ही अर्द्धनारीश्वर स्वरूप धारण करती हो।

शिव शक्ती या शक्ति शिवा रूप
अख अकिस छि पूरणन पूरण करान
शिव सुन्द शरीर चॆय सूर्य चन्द्रम चॆ वॅछ
शिव रूप आत्मा, शिवा रूपिनी
आनन्द भैरव तुॅ आनन्द भैरवी
अरदनॉरीश्वर स्वरूप चॆ दारान ।।
असि अवय ...

मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथि–रसि
त्वमाप–स्तत्वं भूमि–स्त्वयि परिणतायां न हि परम्!
त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्व–वपुषा
चिदानन्दाकारं शिवयुवति–भावेन बिभृषे 35

हे शिवयुवति, आप ही मन, आकाश, तथा भूमि हो। आप ही वायु स्वरूव में ब्रह्माण्ड को स्थायित्व प्रदान करती हो। आप ही अग्नि हो, जल, और पृथ्वी हो। हे कुंडलिनी स्वरूपा माता! इसी सामर्थ्य से सूक्ष्म तत्त्व स्थूल के साथ मिल कर परिपूर्ण हो जाता है। ऐसे शिवमय विश्वरूप, स्वेच्छा से चिद्रूप, एवं आनन्द रूप को, आप ने ही धारण कर रखा है।

मन आकाश अग्नि ज़ल तुँ प्रथवी
वायु तत्वँ चुँ ब्रमांड पॉरान
अमि सामर्थ ही कुण्डलिनी स्वरूपा
सूक्षम स्थूल चँ परिपूर्ण बनान
परि पूर्ण चिदानन्द स्वरूप चँ माता
शिवस शक्ती आसॅनुक छु बास दिवान।
असि अवय ..

तवाज्ञाचक्रस्थं तपन–शशि–कोटि–द्युतिधरं
परं शंभुं वन्दे परिमिलित–पार्श्वं परचिता ।
यमाराध्यन् भक्त्या रवि–शशि–शुचीना–मविषये
निरालोकेऽलोके निवसति हि भालोक–भुवने 36

हे कुंडलिनी शक्तियाँ ! आपका आज्ञाचक्र करोड़ों सूर्य, चन्द्रों से सुशोभित है। वहीं आप परमशिव के वाम पक्ष में शक्ति स्वरूपा विद्यमान हो। इसी अद्भुत स्वरूप की योगीजन आराधना करते हैं तथा वही योगीजन निर्भय होकर अद्भुत प्रकाश लोक में निवास करते हैं।

आज्ञा चक्रॅ चोन कुण्डलिनी शक्ती
करोरॅ बॅद्य सिर्य् चन्द्रम प्रकाशमान
तॅति शिवस खोवॅरि चुॅ शक्ती रूपा
करान यूगी त्वता छि अॅथि स्वरूपस
तिमय यूगी कुनि भय रोसॅ माता
प्रकाशमान लूकस मंज़ छि वास करान ।।
असि अवय...

विशुद्धौ ते शुद्धस्फटिक–विशदं व्योमजनकं
शिवं सेवे देवीमपि शिवसमान–व्यवसिताम्।
ययोः कान्त्या यान्त्याः शशिकिरण–सारूप्यसरणेः
विधूतान्त–र्ध्वान्ता विलसति चकोरीव जगती 37

आपके कण्ठ के विशुद्धि चक्र में विशुद्ध आकाश के जनक व्योमेश्वर सदाशिव की तथा आप व्योमोश्वरी के साथ, निर्मल स्फटिक रूप की मैं सदा आराधना करता हूँ। जिनकी चन्द्र–किरणों जैसे कान्ति से अज्ञान रूपी अन्धकार से मुक्त हुआ जगत् चकोरीवत् मस्त होकर आनन्दित हो जाता है।

चॉन्सि विशुद्ध चक्रस छुस बुँ पूज़ान
निर्मल स्वरुपुँ व्योमिश्वर शिवस
तँति तॉस्य' सॉति चुँ व्योमेश्वरी शूबँवुँन्य
चन्द्रमुँ शीतल प्रकाश छु व्वपदान
सुयँ प्रकाश छु सोरुय अज्ञान कासान
ज़गत चकोरी स्वरूपँ आनन्द तुलान।।
असि अवयं ...

समुन्मीलत् संवित्कमल–मकरन्दैक–रसिकं
भजे हंसद्वन्द्वं किमपि महतां मानसचरम् ।
यदालापा–दष्टादश–गुणित–विद्यापरिणति–
र्यदादत्ते दोषाद् गण–मखिल–मद्भ्यः पय इव 38

हंस दम्पति (शिव–शिवा) के परस्पर आलाप से अठारह विद्याओं जिनमें प्रकृति के गुण दोष अलग करने की शक्ति है का विस्तार होता है जिनकी जानकारी से साधक में उसी प्रकार गुण–दोष विवेचन की शक्ति आ जाती है जिस प्रकार राजहंस में नीर–क्षीर विवेक की शक्ति निहित रहती है। हे माँ ! अनाहत चक्र में पहुँच करक मन–सागर में हंस युगल (शिव–शक्ति) नृत्य मान दिखाई देते हैं।

अनाहत चक्रस प्यठ साधकन छिय
मन सागरस मंज़ हंस जूरिं नॅचान
फोलिमॅति ज्ञानुं पम्पोश मांछि रस तिम
अरदाह विद्यायि ज्ञान व्यस्तारान
ग्वॅन तुँ दूश चारून साधक छि ज़ानान
यिथॅ राज़हंस द्वद तुँ पोञ छि ब्योन करान ।।
असि अवय ...

तव स्वधिष्ठाने हुतवह–मधिष्ठाय निरतं
तमीडे संवर्तं जननि महतीं तां च समयाम् ।
यदालोके लोकान् दहति महति क्रोध–कलिते
दयार्द्रा या दृष्टिः शिशिर–मुपचारं रचयति 39

हे जननी जगत पालना करने वाला माता ! आपके स्वाधिष्ठान चक्र में अग्नि तत्त्व है वहां संवर्ताग्नि शिव के साथ काल–सम्पन्ना भगवती समया की मैं स्तुति करता हूँ। जब वह संवर्ताग्नि रुद्ध अपार क्रोधमयी दृष्टि से सब लोकों को भस्म करने लगता है, तब आप समयाम्बा रूप, कृपा पूर्वक, साधकों को अपनी शीतल दृष्टि से रक्षा करती हो और उन लोकों को भी ठण्डक प्रदान करती हो ।

ही जननी, जगत पालिनी माता
स्वाधिष्ठानुँ प्यठ चुँ अग्नि त्वत
कालाग्नि रुद्र सॉमी तॅति चेय सूत्य
तॉथि शक्ति–रुद्र रूपस छुस स्वरान
कालाग्नि रुद्र य'लि क्रूध संहार करान
साधकन चॅ शीतलुँ दृष्टि रछान ।।
असि अवय..

तटित्वन्तं शक्त्या तिमिर–परिपन्थि–स्फुरणया
स्फुर–न्नानारत्नाभरण–परिणद्धेन्द्र–धनुषम् ।
तव श्यामं मेघं कमपि मणिपूरैक–शरणं
निषेवे वर्षन्तं हरमिहिर–तप्तं त्रिभुवनम् 40

हे अमृतेश्वरी ! मेघ स्वरूपा ! वृष्टि दायिन ! अमृतेश्वर के साथ हम तुम्हारी पूजा करते हैं । सूर्य ताप से तप्त त्रिलोकी में आप सुधामय शाम मेघ रूप मणिपुर से अमृत वर्षा कर सन्ताप हरण करती हो। आप अन्धकार नाशिनी चमकीले आभरणों से जडे विविध रत्नों की चमक के समान इन्द्रधनुष का रूप धारण किये, अन्धकार का संहार करती हो।

शामरंगॖ–ओबरॅ वर्षा करवुन स्वरूप
अमृतेश्वरस सूत्य चे़ छिय पूज़ान
रतनॖ मोखतॖ ज़ॅचॅ़ मणिपुर छख प्रज़लान
इन्द्रधनॅशि रूप अन्दकारन चटान
सिर्य जोशॅ तापॅ तपवॅञि त्रेलोकी
छख सुदामिनी रूप संताप हरान।।
असि अवय..

तवाधारे मूले सह समयया लास्यपरया
नवात्मानं मन्ये नवरस–महाताण्डव–नटम्
उभाभ्या–मेताभ्यां–मुदय–विधि–मुद्दिश्य दयया
सनाथाभ्यां जज्ञे जनकजननीमत् जगदिदम् 41

मैं मूलाधार में विलास करती श्री समया देवी के साथ नवरस नृत्यमग्न नटराज का मानसिक चिन्तन–मनन करता हूँ। आप शिव–शिवा से ही यह समस्त जगत, सनाथ, माता–पिता से युक्त है, आपकी कल्याणकारिणी दया से समस्त संसार का अस्तित्व है।

मुलाधारस प्यठ महाभैरव
नवरस नाटक चे़यँ सात्य करान
चे़ति लास्य रूपँ लय ‘ही महाभैरवी
अँथि स्वरूपस छुस बुँ चिन्तन करान
रुध्र रूप लयि पतुँ अमि स्वरूपँ मोल मॉजि
प्रोव ज़गतन आव व्यकास व्वदयस ।
असि अवय..

गतै–र्माणिक्यत्वं गगनमणिभिः सान्द्रघटितं
किरीटं ते हैमं हिमगिरिसुते कीर्तयति यः ।
स नीडेयच्छाया–च्छुरण–शबलं चन्द्र–शकलं
धनुः शौनासीरं किमिति न निबध्नाति धिषणाम् 42

हे हिमगिरि सुता! जो आपके सुवर्ण–मुकुट का ध्यान से स्मरण करते हैं उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि इस पर तारागण रूपी मणियां जडी हुई हैं तथा इन्द्रधनुष कलाओं से यह सुशोभित है मानो इनका निवास ही यही पर है और इसी में यह लय हो जाते हैं। हे हिमालय पुत्री ! इसी मुकुट का स्मरण साधक अपनी साधना में करते रहते हैं।

डेकॅ टिकॅ मुकट शेरि प्यठ चे़य शूबान
बाह सिर्य मोखत लाल हिहॅ ज़ोतान
चन्द्रमॅ कलायि यन्द्रधनॅशि गाह त्रावान
ओल ज़न यिमन ऑति ऑथि लय गछ़ान
ही हिमाल पुत्री मुकट युथ डेयॅकस प्यठ
साधक छि साधनायि मंज़ सुमरान ।।
असि अवय..

धनोतु ध्वान्तं न–स्तुलित–दलितेन्दीवर–वनं
घनस्निग्ध–श्लक्ष्णं चिकुर–निकुरुंबं तव शिवे ।
यदीयं सौरभ्यं सहज–मुपब्धुं सुमनसो
वसन्त्यस्मिन् मन्ये वलमथन–वाटी–विटपिनाम् 43

हे शिवा ! आपके केश घने, चिकने, कोमल खिले हुए नीलकमल वन के समान हैं, यह हमारे मन के अज्ञान तथा अंधकार को दूर करें। लगता है इन्द्र–वाटिका के पुष्प–गुच्छे इन केशों में स्वयं को सुगन्धित करने के लिये ही आ लगे हैं। हे देवी हमें अन्धकार ने घेर लिया है हम पर दया करो ताकि ज्ञान पद्म खिल उठें।

हे शिव सन्ज़ॅ अरदांगिनी हे शिवे
सियाह केश चे़ कोमल पम्पोशवन
यन्द्राज़ॅ सॅन्दि वाटिकायि हॅन्दि विटप पोश
वलनुॅ आमॅति रूमन बॅनि ना सुगन्ध
साधक ति अन्धकारॅ अज्ञानॅ वॅलिमुॅत्य
कर दया फोलराव ज्ञानॅ पम्पोश ।
असि अवय..

तनोतु क्षेमं न–स्तव–वदनसौन्दर्यलहरी
परीवाहस्रोतः–सरणिरिव सीमन्तसरणिः ।
वहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरी–भार–तिमिर–
द्विषां बृन्दै–र्बन्दीकृतमिव नवीनार्क–किरणम् 44

हे भगवती ! आपके दिव्य मुख के ऊपर दिव्य मांग सिन्दूर से भरी ऐसी शोभा देती है मानो घने केशों में बन्धे अन्धकार को सूर्य की जेज़ किरण बाहर फूट कर नष्ट कर रही हैं। ऐसा लग रहा है कि मानो सौन्दर्य–नद प्रवाहित है। आप श्री की दिव्य सुन्दर लहर हमारा सदा शुभ तथा कल्याण करे। हे प्रज्वलित माता ! यही आशा लेकर मैं प्रतीक्षा रत हूँ।

डेकि प्यठ तालि हॅन्ज़ सुम चॉञि शूबान।
सोन्दरतायि हुन्द आरॅ ज़न पकान
ॲथि सुमि सेन्दूर, खसवुन सिर्य ज़न
अज्ञान घटनॅय कॅचि़ रटिथॅय
छम म्य आशा ही प्रज़लॅवञि माता
कास अज्ञान रोज़ न्यथ सनिदान ।
असि अवय..

अरालैः स्वाभाव्या–दलिकलभ–सश्रीभि–रलकैः
परीतं ते वक्त्रं परिहसति पङ्केरुहरुचिम् ।
दरस्मेरे यस्मिन् दशनरुचि–किञ्जल्क–रुचिरे
सुगन्धौ माद्यन्ति स्मरदहन–चक्षु–र्मधुलिहः 45

हे विश्वम्भरा माँ ! आपके स्वाभाविक घुंघराले बालों से घिरा आपका मुख–कमल मानो दूसरे सुन्दर कमलों के सौन्दर्य पर भ्रमर मंडरा रहे हैं। उसी पद्म मुख के भीतर स्फटिक जैसे दांतों से कुछ मुस्कराने पर निकलने वाली सुगन्ध से स्वयं शिव के नयन रूपी भ्रमर मुग्ध हो जाते हैं। शंकर भी मुदित मन से यही वास करते हैं। माँ ! मुझ पर कृपा कर, मैं यही ध्यान करता रहूँ यही मेरी इच्छा है।

घूंघर मसलङ्ग सुन्दर मुखस प्यठ
मांछ बोंम्बरॅ–गण ज़न छि कमलन हेडान
तॅथि पम्पोशॅ मोखस सफेद दन्द माल यिछ़
सुगन्ध दिवान ज़ि शिव नयनन ति ब्रॅमरान
काम वश शंकर अति वास करवुॅन,
कर कृपा बुॅ रोज़ हा युथुय ध्यान करान ।।
असि अवय.

ललाटं लावण्य–द्युति–विमल–माभाति तव यत्
द्वितीयं तन्मन्ये मकुटघटितं चन्द्रशकलम्।
विपर्यास–न्यासा–दुभयमपि संभूय च मिथः
सुधालेपस्यूतिः परिणमति राका–हिमकरः 46

हे ज्योतिर्मयी माँ ! आपका ललाट स्वयं लावण्य मय चन्द्रकला युक्त कान्ति से चमकता है तथ आपके मुकुट पर चकमता द्वितीय कला का चन्द्रमा सुखकर है। यही ललाट और मुकुट की चन्द्र कलाओं का यदि हम स्थान परिवर्तन (उलट) करें तो अमृत लेप से जुडे शरद पूर्णिमा के पूर्ण चन्द्र स्वरूप आपका मुख मंण्डल कल्याणकारी बन जाता है । हे माँ ! यही आनन्ददायक अमृत वर्षा निरन्तर होती रहे ताकि साधकों को तुम्हारा अनुग्रह प्राप्त हो जाये।

चोन ललाट छु चन्द्रमॅं कला सोसॅं शूबान
बेयि मुकट द्वयि हुन्द चन्द्रॅ प्रज़लान
यिमय चन्द्रम कलायि योद फिरिथ मिल्वोख
हरदॅ चन्द्रमॅ परिपूर्ण बनान
यॅहय ह्रीं मुद्रा अमृत वर्षा
करि साधकन, बॅनि अनुग्रह चोन ।।
असि अवय..

भ्रवौ भुग्ने किंचिद् भुवन–भय–भङ्ग–व्यसनिनि
त्वदीये नेत्राभ्यां मधुकर–रुचिभ्यां धृतगुणम् ।
धनु–र्मन्ये सव्येतरकर–गृहीतं रतिपतेः
प्रकोष्ठे मुष्टौ च स्थगयति निगूढान्तर–मुमे 47

हे भुवन–भयहारिणी माँ ! आपके भौंहों की चढी त्यौरी कामदेव के बाएँ हाथ में लिये उस धनुष के समान है, जिसकी प्रत्यंचा पर चढ़े शर आपके भ्रमर समान नेत्रों से निर्मित है और मदन–कर–मुष्टि क्षमता हीन लगती है, तुम्हारी उदार दृष्टि से भक्तों के सभी भय दूर होते हैं।

ही भय नाशनी छख स्वभाव किञ सदा
जगतन हर प्रकारॅ भय कासॅवॅनि
बुम्ब चानि कामदीव तीरकमान आसॅवन्य
स्वरमॅलि नेथरॅ तीर अथ चॅ रॅटिथय
कामदीव खोव्शॅ अथॅ म्वॅछि रटिथ बलहीन
चानि द्रष्टि बज़र, यि, भय छि कासान ।
असि अवय..

अहःसूते सव्यं तव नयन–मर्कात्मकतया
त्रियामां वामं ते सृजति रजनीनायकतया ।
तृतीया ते दृष्टि–र्दरदलित–हेमाम्बुज–रुचिः
समाधत्ते सन्ध्यां दिवस–निशयो–रन्तरचरीम् 48

हे काल सन्चालिनी शक्ति ! आपका दाहिना नेत्र सूर्य तथा बायाँ नेत्र चन्द्रमा होने से क्रमशः दिन और रात्रि का निर्माण होता है। आपका तृतीय नेत्र अर्धविकसित स्वर्ण कमल के समान दिन और रात्रि के बीच सन्ध्या और उषा का निर्माण करता है। हे समय स्वामिनी माँ ! आप स्वयं ही कालातीत हैं। साधक नित आपसे ही अनुग्रह प्राप्त करना चाहते हैं।

दछुन न्यथर चे़ सिर्य युस ज़गतन दोह दिवान
खोवुर चन्दॅर छु रॉच़ हुन्द कारण
त्रेयुम न्यथिर चे़ अडॅफोल स्वर्ण रूप पम्पोश
छु कारण ज़ि सुबॅ शामुॅ सन्ध्या बनान
ही समयस्वामिनी ध्यानवान छि न्यथ मगन
चे़य कुन चुॅ छख माता कालातीत ।।
असि अवय ...

विशाला कल्याणी स्फुटरुचि–रयोध्या–कुवलयैः
कृपाधाराधारा किमपि मधुराऽऽभोगवतिका।
अवन्ती दृष्टिस्ते बहुनगर–विस्तार–विजया
ध्रवुं तत्तन्नाम–व्यवहरण–योग्या विजयते 49

हे महामाया ! आपकी अष्ट प्रकार दिव्य दृष्टि अष्ट नगरों के नामों से कहे जाने वाले प्रसंगों को स्पष्ट करने में योग्य है। आप ही विशाला, कल्याणी, अयोध्या, धारा, मधुरा, भोगवती, अवन्ती तथा विजया हैं; समय समय पर आपने ही ये रूप धारण किये हैं। हे माँ ! आपकी इस दयामयी अष्ट रूप दृष्टि की सदा जय हो।

दृष्टि रुपुॅ चॅ़य विशाला, कल्याणी
स्वठकॅ रुपुॅ फोलवॅञ छख अयोध्या
धारा, मधुरा भोगवती विजिया
अवन्तीं रुप चे़ विज़ि विज़ि दॉरिमुत्य
ऑठि नाव नगरी तुॅ अष्ट रूप दृष्टि
ही महामाया चे़ जय जय कार ।।
अंसि अवय ...

कवीनां सन्दर्भ–स्तबक–मकरन्दैक–रसिकं
कटाक्ष–व्याक्षेप–भ्रमरकलभौ कर्णयुगलम्।
अमुञ्चन्तौ दृष्ट्वा तव नवरसास्वाद–तरलौ
असूया–संसर्गा–दलिकनयनं किञ्चिदरुणम् 50

हे माँ, महाकवि आपका यशगान मधुर नवरस रचित अस्तुति से करते रहते हैं। आपके भ्रमर–रूप कटाक्ष करने वाले दक्षिण और वाम नेत्र कानों के समीप होने से ही उस नवरस स्तुति का आनन्द लेते हैं। पर मस्तक में स्थित तीसरा नेत्र कर्णों से दूर ईर्ष्या के कारण कुछ अरुण वर्ण सा दीखता है। कान उसके समीप नहीं है, नहीं तो वह भी मगन (मग्न) हो जाता। हे माता! मेरे स्तुति पाठ को उसी प्रेकार सुन ले यदि आपको अच्छा लगेगा तो हमें आपका अनुग्रह प्राप्त होगा।

नवॅरसॅ रागॅ अस्तुती छि गुॅणमात करान
अछन नज़दीख चे़ कन छि आनन्द तुलान
त्रेयम नेथर चे़ प्यठ क'न्य हस्द' व्वज़ल्योमुत
छुस नुं अति कन सुति गॅछ़िहे मग्न
अमीय आयि बोज़ मॅञि अस्तुती माता
करीयॅ खोशॅ तॅ असि बनि चोन अनुग्रह ।।
असि अवय ...

शिवे श्रृङ्गारार्द्रा तदितरजने कुत्सनपरा
सरोषा गङ्गायां गिरिशचरिते विस्मयवती।
हराहिभ्यो भीता सरसिरुह–सौभाग्य–जननी
सखीषु स्मेरा ते मयि जननि दृष्टिः सकरुणा 51

हे दयामयी नवरस द्रष्टा मा! शिव के प्रति श्रृंगार आकर्षण की दृष्टि, इतर जनों के प्रति उपेक्षा, गङ्गा के प्रति रोष, शिवचरित्र पर आश्चर्यमय हर्ष, शिवाभरण नागों के लिए भयमयी दृष्टि, कमलों के शोभा वैभव पर जयवती तथा सखियों की ओर मन्द मुस्कराहट, भक्तों के प्रति सदा दयामयी, तथा जगत के प्रति शान्त करुणामयी दृष्टि हो।

शिवस प्यठ श्रंगार–दृष्टि, थुने व्यपरन
क्रूध गंगि प्यठ, शिव लीलायि वाह
स्वरफॅ आभूशनन भयानख चे़ दृष्टि
पम्पोश फुलयि प्यठ सॉव्खॅ दृष्टि
सखियन प्यठ हास्य, भखत्यन करुना
शान्तॅ दृष्टि चुॅ ज़गतन कर दया ॥
असि अवय ...

गते कर्णाभ्यर्णं गरुत इव पक्ष्माणि दधती
पुरां भेत्तु–श्चितप्रशम–रस–विद्रावण–फले
इमे नेत्रे गोत्राधरपति–कुलोत्तंस–कलिके
तवाकर्णाकृष्ट–स्मरशर–विलासं कलयतः 52

हे गिरिराज कुल की विकसित प्रथम कली, माँ ! आप सर्वेश्वरी हो बाणों के समान आप के विशाल नेत्र हैं। आपके नेत्र कानों तक खिंचे हैं । बरौनियों से सुसज्जित भौहें तीर कमान/धनुष सदृश लगते हैं। लगता है कि कामदेव शिव नाथ पर बाणों से प्रहार कर रहे हैं। समभाव में स्थित उसी शिव को भी अशान्त कर रहे हैं। आपकी विमोहित कर देने वाली यह दृष्टि अद्भुत है।

परवॅतॅ राज़कोलॖ फोजिमॅच़ प्रथम कला
चॖ छख सर्वेश्वरी विशाल न्यथरव
न्यथॅर कनन ताम, अछरवाल बुम्ब तीर कमान
ज़न कामदीवॅ–तीर, शिवस छिय लगान
यिमय तीर छिय करान अशान्त तस स्मरहरस
चॖ कॉचा विमोहिनी यिमव नज़रॅव ।।
असि अवय ...

विभक्त–त्रैवर्ण्यं व्यतिकरित–लीलाञ्जनतया
विभाति त्वन्नेत्र–त्रितय—–मिद–मीशानदयिते।
पुनः स्रष्टुं देवान् द्रुहिण–हरि–रुद्रानुपरतान्
रजः सत्त्वं बिभ्रत् तम इति गुणानां त्रयमिव 53

हे विश्वमाता ईश्वर स्वामिनी! आपके तीन नेत्र सत, रज, और तम के कारण हैं जो सूर्य चन्द्रमा और अग्नि के द्योतक हैं। जिनमें प्रलय पर ब्रह्मा विष्णु तथा रुद्र लय हो जाते हैं। युग के उदय होने पर आप पुनः उन्हें उत्पन्न करने में लग जाती हो। यह आपके इन नेत्रों की महिमा है।

ही विश्वमाता ईश्वर स्वामिनी
त्रि नेत्रॅ दॉरी छख त्रेयव गोनॅव सोस
रज, सत, तमो गोव्ण सिर्य चॖन्द्रॅ अग्नी
त्रिदेव ति प्रलय विज़ि माता चॖेय गछ़ान लय
प्रलयि पतुॅ बेयि व्वथपती छख यिमन दिवान
यि महिमा छि चान्यन यिमन नेथरन ।।
असि अवय ...

पवित्रीकर्तुं नः पशुपति–पराधीन–हृदये
दयामित्रै–र्नेत्रै–ररुण–धवल–श्याम–रुचिभिः
नदः शोणो गङ्गा तपनतनयेति ध्रुवममुं
त्रयाणां तीर्थाना–मुपनयसि संभेद–मनघम् 54

हे पशुपति–पराधीन हृदये माँ ! आपके अरुणा, श्वेत और शाम रंग वाले तीनों नेत्र दयायुक्त सरस्वती गंगा तथा यमुना के संगम हैं तथा त्रिगुण सम्पन्न हैं, तथा हर प्रकार से पापनाशक हैं। आपके ये नेत्र साधकों के लिय प्रयाग सदृश शान्ति और शीतलता प्रदान करने वाले हैं। ये ही नेत्र हृदय को निर्मल बना देते हैं और अज्ञान को मिटा देते हैं।

न्यथ मनस मंज़ चे पशुपती नाथ आसॅवुन
न्य'थरन मंज़ ति छिय त्रे' गोन्‌ बासव'नि
व्वज़ॅल्य, सफेद, शामॅ रंग यिम युथ शूबान
सरस्वती गंगा तुॅ यमुनायि हुन्द म्युल
यिमय न्यॅथर प्रयाग रूप साधकन माता
निर्मल करान तुॅ अज्ञान कासान ।।
ॲसि अवय....

निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं याति जगती
तवेत्याहुः सन्तो धरणिधर–राजन्यतनये ।
त्वदुन्मेषाज्जातं जगदिदमेशेषं प्रलयतः
परित्रातुं शङ्के परिहृत–निमेषा–स्तव दृशः 55

हे धरणिधर–विश्वधर–कन्ये! हिमालय सुता, माँ ! अनुभवी महापुरुषों का कहना है कि आप श्री के पलक खोलने से तथा नेत्र बन्द करने से ही विश्व की उत्पति और प्रलय हो जाता है, पर विश्व का कल्यासण और संरक्षण करने हेतु आपने नेत्रों का निमेष ही रोक रखा है। हे माँ ! जब तुम नेत्रोन्मेष करती हो तो जगत का अस्तित्व प्रकट हो जाता है। इसी लिये आप को जग–जननी कहा जाता है। आप ही जग जननी हो तथा पालन हारी हो, सम्भवतः इसी कारण से आप के नेत्र सदा सचेत रहते हैं।

ही हिमालॅ पुत्री ज्ञानवान छिय वनान
न्यथ'र वटॅनॅ चानि ज़गतन नाश गछ़ान
येलि न्यथॅर चुॅ मुॅचऱान ज़गत छि व्वदयस यिवान
छिय वनान तवय चॅ़ छख ज़गत जननी
चॅ़य ज़गतपालिनी च़'य ज़गत रक्षनी
तवय मा चे़ छिय न्यथर सदा हुशयार ।।
असि अवय .....

तवापर्णे कर्णे जपनयन–पैशुन्य–चकिता
निलीयन्ते तोये नियत–मनिमेषाः शफरिकाः।
इयं च श्री–र्बद्धच्छद–पुटकवाटं क़ुवलयं
जहाति प्रत्यूषे निशि च विघटय्य प्रविशति 56

हे माँ, हे अपर्णा ! आपके नेत्र कानों तक फैले हुए हैं, कहीं कान कोई नादानी न करें कुछ तो इसी कारण भयभीत हैं। इस कारण निमेषहीन मछलियां जल में भय के कारण सदा छिपी फ़िरती रहती हैं और कुमुदिनी भी दिन को आप श्री के सौन्दर्य के सामने कपाट बन्द करके रखते हैं, फिर रात को ही खिलते हैं। तुम्हारे इस भव्य रूप के साथ कोई क्या प्रतिस्पर्द्धा कर सकता है।।

चाजि न्यथर कनन ताम तीर कमान शूबवॅन्य
कनन मा करन फयार भय छु कॅंचन
तवय मा गाडुँ अ'छ वहरिथ जलस तल
खॅटिथ वटिथॅ नीलॅकमल रोज़ान दोहस
रॉच़ मंज़ तिम फोव्लान भय छुख बासान
कुस कॅरि अथॅ स्वरूपस चे़ मानमान ।।
असि अवय ...

दृशा द्राघीयस्या दरदलित–नीलोत्पल–रुचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकर–निपातो हिमकरः 57

हे शिवा! आपकी दूरदर्शिनी, दिव्य दृष्टि से नील कमल की शोभा अत्यन्त मनोहर हो जाती है। इस द्वार पर पड़े दीन दास को भी दृष्टि स्नान कर, ज्ञान दान से धन्य कीजिए। आप श्री की उसमें तनिक भी हानि न होगी, क्योंकि तुम चन्द्र प्रकाश सदृश सरोवरों और सडान्ध जल खड्डों पर समान रूप से विकीर्ण होती हो ।

कर तुँ मेति अनुग्रहॅचि नज़र दयासागरी
छुस बुँ दीन प्योमुत चे़ निश स्यठा दूर
नील कमल छु सुन्दर यि चॉञ दया दृष्टि
ज्ञानुॅ रसॅ श्रान दिवान आरत्यन सदा
रॅच़ माल चुँ छख, क्याह गछ़ीय, कम चे़ माता
छु जूनुॅगाश हिहुय प्यवान डलन तुँ हय्नरन ।।
असि अवय ...

अरालं ते पालीयुगल–मगराजन्यतनये
न केषा–माधत्ते कुसुमशर–कोदण्ड–कुतुकम्।
तिरश्चीनो यत्र श्रवणपथ–मुल्लङ्घ्य विलसन्
अपांग–व्यासंगो दिशति शरसन्धान–धिषणाम् 58

हे राजतनया–सर्वव्यापिनी माँ ! नेत्रों से कानों तक फैली भौहें मानो कामदेव के पुश्प तीर कमान (धनुष) हैं। इस कटाक्ष दृष्टि को देखते ही ऐसा प्रतीत होता है कि मानो कामदेव अपने पुष्प प्रत्यंचा पर चढ़ा कर रति पर वार करने के लिय खड़े हैं। हे महामाया ! हम पर ऐसा अनुग्रह कीजिये कि यह रूप भी हमें ध्यानमग्न करके ज्ञान प्रकाश से प्रकाशित करे।

न्यथरव प्यठुँ कनन ताम बुम्बुँ तीर कमान
ज़न पोशुँ तीरकमान कामदीव सॅन्ज़
अथ कटाक्ष दृष्टि प्यठ सदा छु बासान
कामदीव रति–तीर कमानि चॉरिथ
ही महामाया कॅरिज़ि अनुग्रह त्युथ
युथ यि रूपँ ति रोज़ि ध्यानमय ज्ञान दिवान ।।
असि अवय..

स्फुरद्गण्डाभोग–प्रतिफलित–ताटङ्कयुगलं
चतुश्चक्रं मन्ये तव मुखमिदं मन्मथरथम्।
यमारुह्य द्रुह्य–त्यवनिरथ–मर्केन्दुचरणं
महावीरो मारः प्रमथपतये सज्जितवते 59

हे माँ, आप श्री का मुख जिस पर आपके कानों में लगे ताटङ्क (डेजिहोर) का प्रतिबिम्ब ऐसा लगता है जैसे कामदेव का चार पहियेवाला रथ हो, जिस पर आरूढ़ होकर वह अपने तीरो–तरकश के साथ चल पड़ा है। इस रथ के सूर्य चन्द्रमा रूपी दो पहिये हैं, उसी भमि रथ पर सवार होकर तुम्हारे तेज़ के बल से मानो कामदेव चाव के साथ, शिव से लड़ने के लिये निकल पड़े ।

डेजिहोर जूरि मुगंडन प्रवॅ त्रावान
ज़न कामदीव सुन्द चुँ पर्यि रथ पकान
सिरियॅ चन्द्रमॅ प्रथवी रथ छि चॉरिथ
सु कामदीव द्राव तीरॅ तरकशॅ हथ्थ
चानि तीजुँ बलवान सु मनमथनाथ ज़न
चिकुँ चावुँ द्राव शिवस सुत्य लडने ।।
असि अवय ....

सरस्वत्याः सूक्ती–रमृतलहरी कौशलहरीः
पिबन्त्याः शर्वाणि श्रवण–चुलुकाभ्या–मविरलम् ।
चमत्कार–श्लाघाचलित–शिरसः कुण्डलगणो
झणत्कारैस्तारैः प्रतिवचन–माचष्ठ इव ते 60

हे शर्वाणी ! जब आपके दिव्य कर्ण श्री सरस्वती निर्मित मधुर अस्तुति का आनन्द लेते रहते हैं वाग्देवी की श्रुति मधुर अस्तुति आपको अमृत तुल्य लगती है । आप आनन्दित हो उठती हैं । कर्ण ताटङ्क भी उल्लसित हो उठते हैं। मानो स्वर्ग के वाद्य यन्त्र सक्रिय हो जाते हैं। हे शर्वाणी ! हम पर ऐसी ही दया कीजिए । हम नित इस अमृत वाणी को सुनना चाहते हैं।

वागदीवी हॅन्ज़ अमृतॅ अस्तुती
छय लगान मीठ तुँ कन चे़ आनन्द तुलान
डेजिहॅरि कन वज़ान व्यकासस तिम यिवान
साजुँ सन्तूर ज़न छि स्वर्गकि वज़ान
ही शरवॉनी कर तुँ असि तिछ दया
कनॅ मनॅ बोज़हॉव न्यथ यि वॉणी ।।
असि अवय ...

असौ नासावंश–स्तुहिनगिरिवंश–ध्वजपटि
त्वदीयो नेदीयः फलतु फल–मस्माकमुचितम्।
वहत्यन्तर्मुक्ताः शिशिरकर–निश्वास–गलितं
समृद्धया यत्तासां बहिरपि च मुक्तामणिधरः 61

हे गिरिवंश की श्रेष्ठ सन्तान कुल पताका ! तुम्हारी नासिका रूपी वंश (बाँस) ध्वजाधार के समान उचित फल प्रदान करने वाली है क्योंकि उसमें आपके अत्यन्त शीतल श्वास प्रश्वास से मुक्ता रूपी चमंकते मोती प्रवाहित होते दिखाई देते हैं। यही साधकों की इच्छित इच्छायें पूरी करती हैं । आपकी वाम नासिक़ा रन्द्र से मुक्तामणि युक्त आभूषण लौंग नथ बाहर से दिखाई दे रहा है। अर्थात् इड़ा साधक ऐसे दृश्य ध्यान से संसार मुक्त हो जाता है।

हिमालॅ कोलॅ चिय पताका चुँ छख आसवुॅन्य
नस'ति बीन खॅडा जंडुँ हिश शूभवॅन्य
अति बीनि मोखतुँ कॉत्य श्वासॅ खॅसि वॅसि बनान
दिवान साधकन यछि़मॅत्यन यछा़यन
खोवरि नकवारि मोखतुॅं कॉत्य छिय अवेज़ान
शूबरावान कोलन, इडा साधकन ।।
असि़ अवय ...

प्रकृत्याऽऽरक्ताया–स्तव सुदति दन्तच्छदरुचेः
प्रवक्ष्ये सादृश्यं जनयतु फलं विद्रुमलता।
न बिंबं तद्बिंब–प्रतिफलन–रागा–दरुणितं
तुलमध्यारोढुं कथमिव न लज्जेत कलया 62

हे त्रिपुर सुन्दरी ! मोतियों जैसे दन्तपंक्ति वाली माँ ! आपके स्वाभाविक लाल ओष्ठों की उपमा कैसे करूँ यदि लाल मूंगे की लता के फल से करता तो वृह लता लज्जा वश अफलित रहती है । यदि बिम्बाफल से करूँ उसकी लाली तो आप के प्रतिबिम्ब की ही लाली है, इस कारण आप श्री के अनुपम सौन्दर्य की तुलना तो हो ही नहीं सकती।

ही दीवी दन्दॅ मालुॅ मोखतुॅ फल्य–हिय्ह
वुठ क्या वॅनय किथि स्वर्ख शूबवॅन्य
मूंगिया लता व्वज़ॅजि तॅम्युक फल यि वॅनुॅ हॉह
शरमि किन्य स्व मन्दछान फल नुॅ तस लगान
वनॅ हॉह छि बिम्ब फल व्वजुल नारुॅ तिख हिय्य
मगर तस यि रंग ति चानि तीजुॅ कुय प्रसादं ।
असि अवय ...

स्मितज्योत्स्नाजालं तव वदनचन्द्रस्य पिबतां
चकोराणा–मासी–दतिरसतया चञ्चु–जडिमा।
अतस्ते शीतांशो–स्मृतलहरी–माम्लरुचयः
पिबन्ति स्वच्छन्दं निशि निशि भृशं काञ्जिकधिया 63

आपके चन्द्रमुख की मुस्कान रूपी मधुर चांदनी का पान करते–करते चकोरी रसानन्द में मस्त हो गई है और उन्हें अति मधुर अम्ल चन्द्रमृत खट्टा जान पड़ता है और इसी कारण वह प्रत्येक रात्रि में खटाई दूर करने के हेतु चोंच खोले उड़ती रहती है। अतः हे माँ ! आपके तेजस का ज्ञान रस योगीजन ग्रहण करते हैं और भोगी भोग लिप्सा के कारण भ्रमित हो जाते हैं।

चोन चंद्रॅ मोव्ख–तीज़ युथ अमृत दिवान
चकोरी छि रसॅ मसॅ रोज़ान चवान
चेय चेय स्वभाव तस यि च़ोव्क वुञि बासान
तवय मा छि रॅचन मंज़ न्यथ वुडान
तीज़ चानि ज्ञान रस यूगी छि साधान
बूगी छि विज़ि विज़ि बूगन ब्रमान ।।
असि अवय ...

अविश्रान्तं पत्यु–र्गुणगण–कथम्रेडनजपा
जपापुष्पच्छाया तव जननि जिह्वा जयति सा।
यदाग्रसीनाया: स्फटिक़दृष–दच्छच्छविमयी
सरस्वत्या मूर्ति: परिणमति माणिक्यवपुषा 64

हे विश्वअम्बा ! आपकी उस जिह्वा की जय हो जो जपापुष्प जैसी लाल रंग सी है और सदा जो अपने स्वामी का जप, कीर्तन करती रहती है। आपकी जिह्वा के अग्र भाग पर बैठी स्फटिक श्री सरस्वती भी शुद्ध वाणी से शिव महिमा का गान करती है । शिव नाम का जप करते करते गुलाबी रंग के माणिक्य सदृश शंगरफी रंग की स्वर्णमयी प्रतीत होती है ।

जपा पोशुँ कोंग रंगुँ ज़्यव चॉन्य माता
न्यथ शिव नाव ज़पान चे़ छुय जयकार
ज़ेवि ब्रूंठिमिस प्यतिस प्यठ बिहिथ सरस्वती
शुद्ध वॉणी शिवुँ महिमा करान
शिव नाव ज़ॅपि ज़ॅपि स्वॅ स्वठकुँ रंगॅ दीवी
ति मनि मोखतॅ, शोंगरफुँ रंग बासान ।।
असि अवय़ ...

रणे जित्वा दैत्या–नपहृत–शिरस्त्रैः कवचिभिः
निवृत्तै–श्चण्डांश त्रिपुरहर–निर्माल्य–विमुखैः।
विशाखेन्द्रोपेन्द्रैः शशिविशद–कर्पूरशकला
विलीयन्ते मातस्तव वदनताम्बूल–कबलाः 65

हे शिवा ! दैत्यों को हराकर, उनके अस्त्र–शस्त्र उतार कर स्कन्द, उपेन्द्र और इन्द्र जब आपके पास आकर आपके मुख का ताम्बूल पाकर, जो चन्द्रमा के समान स्वच्छ कर्पूर युक्त है, प्रसाद रूप पा कर, धन्य हो जाते हैं तथा सदा अमर और अजर रहते हैं, तथा त्रिपुर हर शिव के सेवक गण उनके चरण–निर्माल्य अमृत, जो उन्हीं का अधिकार होता है, पा कर कृतार्थ हो जाते हैं।

उपेन्द्र स्कंद इन्द्र राखिसन ज़ीनिथ
तिमन ताज अस्तॅर निथ चे़ छिय नमान
चानि मोव्खॅ द्रामुत तोम्बूल तिमन प्रसाद
तवय रोज़ान छि तिम अजय अमर सदा
शिव चरनन हुन्द न्यरमाल छु अमृत
शिव चण्डॅ गणन छु तॅमिकुय अधिकार ।।
असि अवय ...

विपञ्च्या गायन्ती विविध–मपदानं पुररिपो–
स्त्वयारब्धे वक्तुं चलितशिरसा साधुवचने।
तदीयै–र्माधुर्यै–रपलपित–तन्त्रीकलरवां
निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृतम् 66

हे माँ! श्री सरस्वती का भगवान शिव की महिमा तथा लीला चरित्र का वीणा पर गान करते करते, शिव, प्रशंसा का माधुर्य लेते, आप उल्लासावस्था में आ जाती हो, आपका मधुर स्वर से कुछ धीरे–धीरे बोलना सुनते ही सरस्वती अपनी वीणा बन्द कर झोले में डाल देती है 'वाह' ! वाह! कहते कहते हे माता आपकी वैखुरी (वाक शक्ति) जन्म लेती है और सरस्वती भी अपनी दीन भावना से शर्मा जाती है और वीणा को समेट कर गिलाफ़ (खोली) में बन्द कर देती है।

शिव संज़ शिवता यॅलि वीणायि प्यठ
सरस्वती ग्यवान चुँ छख व्यकासस यिवान
वाह वाह कॅरि कॅरि चानि मोखॅ माता
वैखुरी वुज़ान, बनान मधुर वाणी
सरस्वती छि मंद्छान हॅचर किन्य स्वॅ पानय
वीणा वुँटिथ गिलाफास मंज़ थवान ।।
असि अवय ...

करा्ग्रेण स्पृष्टं तुहिनगिरिणा वत्सलतया
गिरीशेनोदस्तं मुहुरधरपानाकुलत्रया
करग्राह्यं शंभोर्मुखमुकुरवृन्तं गिरिसुते
कथंकारं ब्रूम–स्तव चुबुक–मौपरम्यरहितम् 67

हे पर्वतपुत्री हिमसुता ! आपके पिताश्री ने वात्सल्य भाव से अपकी अतिसुन्दर ठुड्डी (चिबुक) को बार–बार उंगुलियों से सहला कर उठाया है, हे माँ ! उसी ठुड्डी को हाथ से आईने के समान पकड़ कर महादेव शिव आपके निर्मल सुन्दर शक्तिरूपा मुख को देखते रहते हैं। आपकी उस टुड्डी का सौन्दर्य अनुपम है।

ही हिमाल पुत्री कुस हेकि वरनन
कॅरिथ चानि होंगनि योसॅ गॅरिथ चॅ़रिथ सुन्दर
हिमाल राज़न लोकचारुँ अथॅ रॅटि रॅटि
लोल सान गॅरॅन बुॅरॅन माय अथ स्यठा
अथि होंगन्य ज़न ऑनुँ लोटॅ रटिथ सदाशिव
सुन्दरतायि हुन्द ज़गत स्वरूप व'छान ।।
असि अवय ..

भुजाश्लेषान्नित्यं पुरदमयितुः कण्टकवती
तव ग्रीवा धत्ते मुखकमलनाल–श्रिय–मियम्।
स्वतः श्वेता कालागरु–बहुत–जम्बालमलिना
मृणाली–लालित्यं वहति यदधो हारलतिका 68

हे भगवती! त्रिपुरारि(शिव) की भुजाओं के स्पर्श–आलिङ्गन से आपकी ग्रीवा (गरदन) खुरदुरी सी लगती है और मुखकमल को धारण करने वाली कमल नाल सी शोभा दे रही है। यह ग्रीवा वास्तविक में श्वेत वर्ण होते हुए भी काले अगर के लेप से श्यामल दिखायी देती है । सुषुम्नां के मध्य मानो कीच में कमल शोभायमान है।

पम्पोश म्वखस चे़ गरदन सुन्दर यिछ़
त्रिपुरारी शिवन कॅरि म्वजॅ ति मीठिं
शिवॅ, स्पर्श, बासान यि गरदन माता
पम्पोश म्वॅखस ज़न यि लोटॅ कंडिदार
अघरॅ बस्मॅ लेंपुन चे़ गरदॅनि माता
सुषमॅनायि मॅज़ि यि ज़न लेम्बि पम्पोश ।।
असि अवय ....

गले रेखांस्तिस्रो गति–गमक–गीतैक–निपुणे
विवाह–व्यानद्ध–प्रगुणगुण–संख्या–प्रतिभुवः
विराजन्ते नानाविध–मधुर–रागाकर–भुवां
त्रयाणां ग्रामाणां स्थिति–नियम–सीमान इव ते 69

हे गति–गमक–गीतैक–निपुणे माँ ! आप गति, गमक और गीत को विस्तार प्रदान करती हैं। आपकी ग्रीवा (गरदन) पर तीन रेखायें सप्त स्वरों के तीन ग्रामत्रय (षडज, मध्यम, गान्धार) दीखती है। यही कण्ठ की तीन रेखाएँ विवाह पर नटराज से बाधे गये सौभग्य सूत्र की तीन लड़ियां हैं । ऐसा लगता है कि गान विद्या के समस्त स्वरों को तीन ग्राम–रूप (क्रिया, ज्ञान, इच्छा) बांध कर आप त्रिभुवन की ज्ञोनश्वरी ने, नियत कर दिये हैं।

ही रागेश्वरी हॅटिस चॖ रेखायि त्रे'
गति, गमक तुॅ गीतम व्यछ़नावान
तवय ति मा तॅमि नटराजन गंजिनय
त्रे लरॅ. खान्दरस प्यठ मंगलसूत्रस
सतन स्वरन, त्रे स्वर रस, क्रिया ज्ञान इच्छा दिति'थ
तवय त्रोबॅवनॅच चुॅ छख ज्ञानेश्वरी।।
असि अवय ..

मृणाली–मृद्वीनां तव भुजलतानां चतसृणां
चतुर्भिः सौन्दर्यं सरसिजभवः स्तौति वदनैः।
नखेभ्यः सन्त्रस्यन् प्रथम–मथना–दन्धकरिपोः
चतुर्णां शीर्षाणां सममभयहस्तार्पण–धिया 70

हे माँ ! अन्धकरिपु शिव के नखों से पांचवे सिर का मर्दन होने पर त्रास खाकर ब्रह्मा अपने बचे चार सिरों की रक्षा की अभिलाषा से अभयदान के हेतु आप की शरण में आकर अस्तुति करते हैं और चार वेदों का विस्तार पूर्वक विष्लेशण होता है। यही वेद अस्तुति आपके अद्भुत सौन्दर्य तथा शौर्य की ही वर्णना है। हे माता ! आपकी चतुर भुजाएँ अपने शरण में लेकर सदा अभयदान प्रदान करती हैं।

कमलुँ नाबि प्यठ व्वपद्योमुत सु ब्रह्मा
यस पंचिम कलुँ नमव च़ोट शिवन्
खूचॅमुत सु च़ोर कलुँ रछनस आमुत
अस्तुती करान चे चोर वीद वखनान
चॉञि च़ॅतुर बोज़ॅ यिम अभय् रूपॅ माता
शरनागतन दिवान सदा अभय दान ।।
असि अवय ..

नखाना–मुद्योतै–र्नवनलिनरागं विहसतां
कराणां ते कान्तिं कथय कथयामः कथमुमे।
कयाचिद्वा साम्यं भजतु कलया हन्त कमलं
यदिक्रीडाल्लक्ष्मी–चरणतल–लाक्षारस–चणम् 71

हे उमा ! मैं आपके कोमल सुन्दर हाथों की कान्ति का वर्णन किस प्रकार से करूँ ? जिनके नखों की लाली नवविकसित कमलों के रंगों की भी हंसी उड़ाती है उनके साथ क्या समानता करूँ, ये शंगरफी कान्ति से चमक रहे हैं। लक्ष्मी के क्रीड़ा रत चरणों के लाक्षारस के स्पर्श से ही उन्हें अरुण वर्ण प्राप्त हुआ है । इसी कारण, हे माँ, आप की अरुणिमा का कोई उपमेय ही नहीं है।

ही उमा भगवती बुँ किथुँ हयकुँ वरनन
कॅरिथ चान्यन–सुन्दर रच़फॅलि अथन
यिमन नमॅ शोंगरफॅ ज़ॅचॅ़ छय माता
हय्डान प्रभातक्यन फोलिमत्यन कमलन
कारण तिमन ति लक्षमी रंगुँ पादव
वरदान यि रंग, तवय तिम ति मन्दछान ।।
असि अवय ..

समं देवि! स्कन्द–द्विपवदन–पीतं स्तनयुगं
तवेदं नः खेदं हरतु सततं प्रस्नुत–मुखम्।
यदालोक्याश्ङ्काकुलित–हृदयो हासजनकः
स्वकुम्भौ हेरंबः परिमृशति हस्तेन–झडिति 72

हे देवि ! स्कन्द और गणेश द्वारा पान किये गेये स्तन्द्वय हमारे खेद को सदा दूर करते रहे। जिनके मुख से सदा दुग्ध टपकता रहता है। तुम्हारा स्तन दुग्ध तो साधकों के लिये अमृत सदृश है। हम सब के संकटों का निवारण हो। तुम्हारी गोद में गणेश और कुमार स्कन्ध बैठ कर नित अमृतपान करते रहते है। उन स्तनों का पान करते करते शंकाकुल गणेश कभी कभी अपने ही शीश के कुम्भ टटोलते रहते हैं। श्री गणेश जी कीं यह क्रीड़ा अत्यन्त विनोद एवं हास्य उत्पन्न करने वाली हैं।

चोन वछुँ द्वोद अमृत साधकन मॉजि
कॉसितन अँसिं सारिनँय संकट
चानि क्वछि मंज़ बिहिथ गणेश कुमार माता
न्यथ चवान छि आनन्द द्वोद तिम सदा
मॉज़ि गणेशस छु ब्रम आशचर्य युथ गछ़ान
वँछान पनॅनि मुगंड छिस डेकुँ सँय प्यठ ।।
असि अवय ..

अमू ते वक्षोजा–वमृतरसा–माणिक्य–कुतुपौ
न संदेहस्पन्दो नगपति पताके मनसि नः।
पिबन्तौ तौ यस्मा–दविदित वधूसङ्ग–रसिकौ
कुमारावद्यापि द्विरदवदन–क्रौञ्चदलनौ 73

हे नगपति की विजयपताका माँ ! तुम्हारे दुग्ध भरे अमृत स्तन अमृत–कलश हैं। अमृतरस से परिपूर्ण माणिक्य–निर्मित कलशों के समान स्तनों को देखकर मन में सन्देह का स्पन्दन ही नहीं होता, क्योंकि स्तनों का दूध पीते पीते स्कन्द और गणेश दानों ही व्रतवान तथा बल–ज्ञान युक्त रहे हैं।

ही हिमालॅ–राजुॅ सॅन्ज़ विजय पताका मॉजि
द्वोद वछुॅ बरिथ चे़ छिय अमृत च़ॅडि
माणिक रतन हिहॅ ज़ोतवॅञि सदा यिमॅ
बखचान वीरुत तुॅ समयम दिवान
अमीय अमृत द्ववुॅ कुमार गणेश द्वनवय
रुदि सदा वृतवान बल ज्ञान सॉव्स ।।
असि अवय ....

वहत्यम्ब स्तम्बेरम–दनुज–कुंभप्रकृतिभिः
समारब्धां मुक्तामणिभि–रमलां हारलतिकाम्।
कुचाभोगो बिम्बाधर–रुचिभि–रन्तः शबलितां
प्रताप–व्यामिश्रां पुरदमयितुः कीर्तिमिव ते 74

हे अम्बा ! गजासुर का वध करके शंकर ने मुक्ता मणि उसके गण्डस्थल से निकाली । वही माला आपने अपने गले में धारण की है। आपके मुख की लालिमा स्तनों के मध्य सुशोभित मौक्तिक माला के कणों में प्रतिबिम्बत हो रही हैं। आपके गले में यह मनिमाला सुशोभित है। आपके सौन्दर्य की अरुणिमा एवं शिव प्रताप की धवलता दोनों का संगम माला को और अधिक आकर्षक बना देती है। माला भी शिव शक्ति के वैभव से धन्य हो जाती है।

गजास्वरॅ वद कॅरिथ कोड तॅमि शंकरन
मस्तकॅ मंजुॅ तस मणि–मोखतॅ माल
सोय मोखतॅ माल नॉलि त्राविथ चॆ माता
चानि लालिमाय रोट तॅमि कोङ्ग रंग
सफेद बजर शिव सुन्द व्जुल चॉनि शक्ति
छावान चुॅ शिव–शक्तिं हुन्द बजर ।।
असि अवय ...

तव स्तन्यं मन्ये धरणिधरकन्ये हृदयतः
पयः पारावारः परिवहति सारस्वतमिव।
दयावत्या दत्तं द्रविडशिशु-रास्वाद्य तव यत्
कवीनां प्रौढाना-मजनि कमनीयः कवयिता 75

हे गिरिराज कन्या ! हे माँ, मेरी धारणा है कि आपके हृदय से प्रवाहित होने वाले सारस्वत ज्ञान, स्तनों में से पय-रूपेण दूध बहता है। आपकी दया-द्वारा पिलाये हुए दूध से द्रविड शिशु ऐसा ज्ञानमय हुआ कि उत्तम, प्रौढ कवियों के समान कमनीय कवितायें रचीं जिन्हें पढ़कर बेड़-बड़े ज्ञानी भी आश्चर्य चकित हुए ।

ही पारवती चुँ द्वँद अमृत सागर
युस बखत्यन सारस्वत ज्ञान दिवान
चे़ चोवथन यि द्राविडँ बालुक गॅलि गॅलि
तस वुजे़यँ गद गद वॉनी सुन्दर
चानि द्वधुँ-ज्ञान बालकन गॅरि कवितायि
बॉडि बॉडि ज्ञानी ति गॅय परेशान ।।
असि अवय ...

हर क्रोध–ज्वालावलिभि–रवलीढेन वपुषा
गभीरे ते नाभीसरसि कृतसङ्गो मनसिजः।
समुत्तस्थौ तस्मा–दचलतनये धूमलतिका
जनस्तां जानीते तव जननि रोमावलिरिति 76

हे दयामयी ! जब महादेव की क्रोध–ज्वाला से दग्ध देह वाले कामदेव ने आपके गम्भीर नाभि सागर में गोता लगाया, वह शीतल हो गया और अग्नि बुझ गई तब उससे धुंए की लता जैसी नीचे से ऊपर तक एक रेखा बन गई । हे माँ, उस धूम लतिका को विश्व आप श्री की रोमावली के नाम से जानते हैं। जो नाभि के ऊपर एक केश जाल के सामन शोभित है।

शिव क्रूध्ँ यॅलि दाद कामदीव माता
तॅमि व्वॅठ छ़ॅनि चानि नाबि सागरस
तॅति शेहॅल्यव अदुॅ नार' गव छ़ॅत तस
दॅहॅ तार तस वॅछ़ खॅचॅ ह्योर ताम
ज्ञानी तॅथि वनान चॉजि रोमावली
मसवालुॅ हिश नाभि प्यठॅ शान्त करान ।।
असि अवय ..

यदेतत्कालिन्दी–तनुतर–तरङ्गाकृति शिवे
कृशे मध्ये किञ्चिज्जननि तव यद्भाति सुधियाम्।
विमर्दा–दन्योन्यं कुचकलशयो–रन्तरगतं
तनूभूतं व्योम प्रविशदिव नाभिं कुहरिणीम् 77

हे शिवा ! कालिन्दी (यमुना) की क्षीण तरंग जैसी आकृति वाली रोमावली जो आपके कटि भाग में कुछ कुछ दिखायी देती है, वह बुद्धिमानों को तुम्हारे कुच कलशों के मध्य परस्पर की रगड़ से पतली आकाश रूप क्षीण रेखा जैसी आपकी नाभि में प्रवेश करती हुई प्रतीत होती है। यही अद्भुत रूप सौन्दर्य देखकर साधक अमृत्व प्राप्त करते हैं।

हे शिवे ऑव्युल वछुँ मध्य ज़ोतुँवुन
छि रोमावली लहर यमुनायि हिंश
यि आकाश साधकन वछ बोनुँ बासान
अनुभवेँ नामि मंज़ लय सपदान
आकाशेँ अर्धँ कलशव मंजेँ नीरिथ
साधक छि अमृत पद प्रावान ।।
असि अवय ...

स्थिरो गङ्गावर्तः स्तनमुकुल–रोमावलि–लता
कलावालं कुण्डं कुसुमशर–तेजो हुतभुजः
रतेर्लीलागारं किमपि तव नाभिगिरिसुते
बिलद्वारं सिद्धे–र्गिरिशनयनानां विजयते 78

हे गिरिसुता ! आपकी सुन्दर नाभि की जय हो, जो गंगा जी के प्रवाह में स्थिर भंवर, नीचे की ओर फैली हुई रोमावली लता की क्यारी, से तुम्हारे स्तन कामदेव के अग्नि कुंड जैसी तथा रति के विलास रास समान शिव के नेत्रों के हेतु योग सिद्ध गिरि–गुहा जिसमें बैठकर महादेव शिव के नेत्र शान्ति पाते हैं । आपकी नाभि सिद्ध शान्ति प्रधान केन्द्र है। यही पहुँच कर उसकी साधना सिद्ध हो जाती है।

नाबिस्थानॅ केन्द्रस चे़ जय जयकार
यि गंगायि मंज़ ठहॅरिथ ज़ि आवलुन
ॲति रोमावली लता फो'लिथ स्थन चॉनि
कामदीव अग्न कोण्ड रति विलास रास
यहय गोफायि गो'व्ल न्यथरन तस शंकरस
शक्ति भाव दिवान् साधना–स्यद करान ॥
असि अवय ...

निसर्ग–क्षीणस्य स्तनतट–भरेण–क्लमजुषो
नमन्मूर्ते–र्नारीतिलक शनकै–स्त्रुट्यत इव।
चिरं ते मध्यस्य त्रुटित–तटिनी–तीर–तरुणा
समावस्था–स्थेम्नो भवतु कुशलं शैलतनये 79

हे शैल पुत्री ! जगत रक्षिणी माँ, आपही जगत की प्रतिष्ठा हो। आपकी उस नाजुक कटि का सदैव कुशल हो, जो स्वभाव से ही क्षीण तथा नाजुक तो है ही, पर वक्ष भार से ऐसा प्रतीत होता है मानो कटि ही टूट कर गिर रही है। जैसे पहाड़ी नद के तटवर्ती वृक्ष जल प्रवाह को सहन न कर सकने के कारण अपने मूल से हिल उठे लगते हैं । हे माँ, यह मध्य भाग सदा कुशल रहे। इसी पर सारे जगत का विलय और उद्धार निर्भर है।

ही हिमाल पुत्री चॅ़ ज़गत चॅ प्रतिष्ठा
चोन कमर छु बासान स्यठा आ'व्युल
वछ़बार, नामि निश, संबाल्या यि बारस
बासान आरॅ बॅठि फियूरमुत कूल
त्रेयलूकी हुन्द पालन पोशन
यॅह्य स्थान तुँ सुशमना स्वभाव चॅ़ शक्ति ।।
असि अवय ...

कुचौ सद्यः स्विद्य–त्तटघटित–कूर्पासभिदुरौ
कषन्तौ दोर्मूले कनककलशाभौ कलयता।
तव त्रातुं भङ्गादलमिति वलग्नं तनुभुवा
त्रिधा नद्धं देवि त्रिवलि लवलीवल्लिभिरिव 80

हे देवी ! कुच द्वय के रगड़ से पसीने के कारण लगता है कि कहीं आपकी स्तन पटी के बन्द टूट न जायें और कुछ अनुचित न हो जाये, इसी कारण त्रिभङ्गा कटि को कामदेव ने लवली–वल्ली लता से तीन बार कस कर बांधा हो! ताकि स्तन वक्ष–भार को सहन कर सके। शिव प्रेमाधिक्य ही इस वक्ष भार का मूल कारण है। हे माँ ! आप साधकों को विचार पालना के लिये प्रेरित करती हो।

ही ज़गतमाता चे़ वछ़ बन्द छुय गंडिथ
गुमॅ चारॅ बारॅ मा यियॅ फटनस
तवय मा कामदीवन त्रि–वारुॅ–लवली
क्रीपर गोंडुय रॅटुन यूत बोड बार
अथाह प्रेम शम्भू सुन्द अथ छु कारण
व्यचा़र पालनुक चोन साधकन व्यचा़र ।।
असि अवय ..

गुरुत्वं विस्तारं क्षितिधरपतिः पार्वति निजा–
न्नितम्बा–दाच्छिद्य त्वयि हरणरूपेण निदधे।
अतस्ते विस्तीर्णो गुरुरय–मशेषां वसुमतीं
नितम्ब–प्राग्भारः स्थगयति लघुत्वं नयति च 81

हे भगवती ! श्री पर्वतराज ने कन्या धन रूप अपने नितम्ब से गरुत्व तथा विस्तार दहेज रूप आप को प्रदान किये हैं और इसी कारण आपके नितम्ब चौड़े–भारी–विशाल इतने हैं कि पृथवी को अपनी लघुता का आभास हुआ और उसे आपके आधीन नियन्त्रित रूप से चलना पड़ा । हे माँ ! तुम्ही मूल शक्ति हो और शक्ति का विस्तार ।

पनुन बजर गोब्यरॅव्यसतार हिमालॅ राज़न
च़टिथ चे़ दितुनय दाज खान्दरस प्यठ
यॅहय कारण चानि बजरुक माता
प्रथवी हॅमेय पॅचि़ व्यस्तार सान
चान्यन रानन प्यठ अमियुक व्यसतार
चॅ़य शक्ति अमिच तुॅ च़'य आधार ।।
असि़ अवय ...

करीन्द्राणां शुण्डान् कनककदली–काण्डपटलीं
उभाभ्यामूरुभ्या–मुभयमपि निर्जत्य भवति।
सुवृत्ताभ्यां पत्युः प्रणतिकठिनाभ्यां गिरिसुते
विधिज्ञे जानुभ्यां विबुध–करिकुंभ–द्वयमसि 82

हे हिम सुता अम्बा ! आपकी सुरम्य जंधाओं के सामने हाथी के शुण्ड(सूँड) और कन्क–कदली–वृक्ष का सौन्दर्य भी लज्जित होता है। आपके गोल कमनीय घुटने, जो भगवान शंकर को नमन करते–करते इतने कठिन तथा सुडौल हुए हैं कि ऐरावत के रम्य कुम्भ–स्थल भी लज्जा जाते हैं। इस अद्भुत सौन्दर्य को देखकर स्वर्ग निवासी ऐरावत हाथी अपनी हीनता पर शरमा जाता है।

हिमाल–पुतरी, चे़' रानुँ बलवान तुँ सुन्दर
हँसि करुँ तुँ सोनुँ केल कुल्य मन्दछान
न्यथ वृथ को'ठि' वुँटिथ नमुन तस शंकरस
को'ठि बनेम'त्य स्वठकुँ गोलाकार
यि अङ्ग शूभा वुँछिथ स्वर्ग ऐरावतस
पनन्यन मुगंडन प्यठ शरम यिवान ।।
असि अवय ...

पराजेतुं रुद्रं द्विगुणशरगर्भौ गिरिसुते
निषङ्गौ लङ्घे ते विषमविशिखो बाढ–मकृत।
यदग्रे दृश्यन्ते दशशरफलाः पादयुगली–
नखाग्रच्छद्मानः सुर–मकुट–शाणैक–निशिताः 83

हे गिरि सुता ! आपकी दोनों पिण्डलियाँ रुद्र को पराजित करने हेतु कामदेव के तरकशों से निकलने वाले शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गन्ध के चुभते बाण हैं। इन तरकशों के आगे आपके चरणों की अंगुलियों के दस नखों के अग्रभाग इतने तेज़ दिखाई देते हैं कि उसकी पराजय निश्चित है। यह नख अग्रभाग देव गणों के प्रणाम करते करते उनके मुकुट मणियों से घिस घिस कर सान पर जैसे चड़े, तेज़ तथा चमकीले लगते हैं। हे जया रूपा ! देव गण नित आपके सम्मुख नमन करते हैं । उनके मुकुटों की रगड़ से आपके नख–अग्र–भाग चमक रहे हैं।

शब्द, स्पर्श, रुप, रस गन्ध छि क़ामदीवॅ तीर
युस नुँ पूश शिवस चुँ द्रायख पानय
चानि जंघायि तरकश ज़ॅ, दॅह तीर यिमन
व्वज़ॉल्य तेज़ ओंगजि नम वॅज़ॅरॅ चमकान
खहरन तिमन लगान दीवगण ताजव
यिम नमान चे़ न्यथ छख जया रूपा ।।
असि अवय ...

श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया
ममाप्येतौ मातः शिरसि दयया धेहि चरणौ।
ययोः पाद्यं पाथः पशुपति–जटाजूट–तटिनी
ययो–र्लाक्षा–लक्ष्मी–ररुण–हरिचूडामणि–रुचिः 84

हे दयामयी माँ ! वेद–वेदाङ्ग आपके चरणों को शिरोभूषण के रूप में धारण किए हुए हैं। उन चरणों का जल ही महादेव शिव के जटा–जूट में निर्मल गंगा है। आपके चरण तलवों में लगी लाक्षा की प्रभा ही विष्णु के मणि मुकुट की शोभा लगती है। आप ऐसे चरण युगल मेरे मस्तक पर भी दया पूर्वक स्थापित कीजिए – हे माँ ! आपतो दया का अथाह सागर हो ।

वेद–वेदाङ्गनन चॉनि पाद प्यठ कॅनि
पादॅ ज़ल बॅन्यव शिवस ति जटि गंगा
लाछि रंग पादन हॅन्दि शूमायि सूॅत्य
विष्णोस छु मणि–मुकुट ज़ोतान सदा
हि दया सागरी छम में अभिलाशा
थवख'ना यिम पाद मेति शेरि प्यठ ।।
असि अवय ....

नमोवाकं ब्रूमो नयन–रमणीयाय पदयोः
तवास्मै द्वन्द्वाय स्फुट–रुचिरसालक्तकवते।
असूयत्यत्यन्तं यदभिहननाय स्पृहयते
पशूना–मीशानः प्रमदवन–कङ्केलितरवे 85

हे माँ, आपके लाक्ष वर्ण चरणों को, जो अत्यन्त सुन्दर, शुभ्र तथा महावर से रंगे हुए हैं, आपको हमारा बारम्बार प्रणाम है। वाटिका में नित पद्मिनी स्वरूप आपका पाद स्पर्श आशोक वृक्षों को प्राप्त होता है । वे पुष्पित हो उठते हैं और विकास प्राप्त करते हैं। हे माँ ! आप श्री के सुन्दर बगीचे में लगे अशोक वृक्षों को पशुपतिनाथ अत्यन्त ईर्ष्या से देखते हैं कारण इन वृक्षों को आप श्री के चरण कमलों का स्पर्श लगता है। शिव ईर्ष्या का कारण यही है, कि उसे भी आप अनन्ता के पाद–स्पर्श की इच्छा लगी रहती है।

लाछि् रंगुॅ पाद चॉञि छि आनन्द दायक
अस्य नमान न्यथ यिमन चे़ छुय जयकार
पदमनी स्वरुपुॅ न्यथ वाटिकायि मंज़ चॉञि
पाद लगान अशोक कुल्यन फो'लान लबान व्यकास
पशुपति नाथस वॅछिथ यि अज़रवुन यिवान
खरान छुस अशोक तुॅ प्रारान स्पर्शस ।।

असि अवय ...

मृषा कृत्वा गोत्रस्खलन–मथ वैलक्ष्यनमितं
ललाटे भर्तारं चरणकमले ताडयति ते।
चिरादन्तःशल्यं दहनकृत–मुन्मूलितवता
तुलाकोटिक्वाणैः किलिकिलित–मीशान–रिपुणा 86

हे माँ ! जब आप श्री के गोत्र उपनाम तथा नाम उल्लेख में भूल के कारण महादेव ने लज्जा से नीचे की ओर मुँह झुकाया तथा आपने रूठ कर शिव–जटा पर ताड़न किया उस समय आपके चरणों में विराजित नूपुर झंकार उठे। उसी समय कामदेव, जिसके शरीर को शिव ने भस्म कर दिया था, महादेव का मानखण्डन होते देख आनन्द से खिल खिला उठे। कामदेव इस बात पर भीतर ही भीतर कुढ़ रहा था कारण शिव क्रोध से उनका शरीर भस्म हो गया था । तुम्हारे नुपुर झंकार से वे चमत्कृत हो उठे। आपकी जय जयकार हो ।

अकि दोह़ शिवन चे़ नाद बेयि नावुँ द्रियॅनय
गलती च़ीजि़न तुँ कलॅ नोमॅरुन
चे़ रुशिथ जटायि प्यठ ताडन कोरथस
कामदीव खर्व्शों गव ओ'सुन ठाह–ठाह
शिव क्रूधुँ तस बस्म करुन ओस फेंटान
रो'त्रि छोत्रि चानि होवनस पनुन कमाल ।।
असि अवय ..

हिमानी–हन्तव्यं हिमगिरि–निवासैक–चतुरौ
निशायां निद्राणं निशि चरमभागे च विशदौ।
वरं लक्ष्मीपात्रं श्रिय–मतिसृजन्तौ समयिनां
सरोजं त्वत्पादौ जननि जयत–श्चित्रमिह किम् 87

हे भोग–मोक्ष दात्रि माँ ! आप श्री के कमल पाद हिमालय में रहने के अभ्यासी हैं, सदा खिले रहते हैं। आप तो हिमालय की हिम वादियों में घूमने की अभ्यस्त हैं। यह हर प्रकार के कमलों में श्रेष्ठ हैं तथा भक्तों को सदा श्रेय देने वाले हैं। साधारण कमल तो हिम से सड़ते, गलते और सूख जाते हैं तथा रात्रि में सो जाते हैं। कुछ तो दिन को ही खिलते हैं और वह महा–लक्ष्मी की कृपा का सौभाग्य प्राप्त करते हैं। पर आपके चरण कमल तो सदा ही खिले रहते हैं जो भक्तों को हर प्रकार की लक्ष्मी प्रदान करते हैं।

चॉनि पाद–कमल सदा फोलवुॅन्य रोज़ान
चुॅ छखना हिमालुॅ–शीनुॅ–पर्वतन नच़ान
तवय छिनुॅ यिम केंह साधारन कमल
यिम दज़ान शीनुॅ रॉच़न च़मान होखान
केन्ह फॉव्लान दोहस बनान लक्ष्मी छि आसन
चे़ न्यथ फोलवुॅनि दिवान छि सोखॅ साधकन ।।
असि अवय ...

पदं ते कीर्तीनां प्रपदमपदं देवि विपदां
कथं नीतं सद्भिः कठिन–कमठी–कर्पर–तुलाम्।
कथं वा बाहुभ्या–मुपयमनकाले पुरभिदा
यदादाय न्यस्तं दृषदि दयमानेन मनसा 88

हे महेश्वरी ! तुम्हारी चरण आंगुलियों (आंगुरी–ऊँगली) के अग्र भाग अत्यन्त कौमल और नाजुक हैं यहीं संकट काल में साधकों की रक्षा करते हैं । ईश्वर जानते हैं कि क्यों इन कमल चरणों को कुछ सज्जनों ने कछुवे की पीठ से उपमा दी है। कुछ समझ नहीं आता । इन चरणों को अत्यन्त करुणार्द्र हृदय से हाथों में उठाकर महादेव शिव ने विवाह के समय रीति अनुसार बड़े प्रेम से हथेलियां फैला कर धीरे–धीरे शिला पर रखा था।

चॉनि पादु टेन्ढि यिथि कोमल तुँ नोज़ुक
साधकन सदा रछान आपदायि मंज़
ज़ानि दय क्याज़ि गुणमातव कंचन
बासेय कछवुँ थर हिय्ह यिम कठोर
त्रिपुरारी शिवन यिम पोषॅ पाद टॉठि
रॅटिन थॉविन व्यवाह विज़ि काजॅवटस प्यठ।।
असि अवय ...

नखै–र्नाकस्त्रीणां करकमल–संकोच–शशिभिः
तरूणां दिव्यानां हसत इव ते चण्डि चरणौ
फलानि स्वःस्थेभ्यः किसलय–कराग्रेण ददतां
दरिद्रेभ्यो भद्रां श्रियमनिश–मह्नाय ददतौ 89

हे चण्डिके ! आपके चरण नख कल्प वृक्षों की हंसी उड़ाते हैं। वह केवल अपनी हीनता का अनुभव करते हैं। आप के नख चन्द्रकला सदृश हैं । यह देख कर अप्सराएँ हीन भावना के कारण अपनी मुट्ठियाँ बन्द कर देती हैं । अर्थात् अपने नख छिपा लेती हैं। आपके नख तो दस चन्द्रमाओं के समान फलदायक प्रतीत होते हैं। कल्पवृक्ष तो केवल स्वर्ग लोक में वास कर रहे देवताओं को ही फल प्रदान करते हैं, परन्तु आपके चरणकमल प्रत्येक समय संसारी पुरुषों, साधकों तथा दीन हीन मानवों को सदा इच्छित कल्याण और सम्पदा प्रदान करते रहते हैं।

चन्द्रॅ कलायि हिय्ह छि नम चॉनि चण्डि
यिः डीशिथ छि अफसरायि अथ व'टिथ थवान
केन्ह नुॅ प्रावान, हचर लगान कल्प वृक्षन्य
यिम दिवान छि स्वर्गवॉसियन बस फल
चुॅ छख सदा अनुग्रही मखत्यन तुॅ ऑरत्यन
दिवान सोख तुॅ सम्पदा करान अनुग्रह ।।
असि अवय ...

ददाने दीनेभ्यः श्रियमनिश–माशानुसदृशीं
अमन्दं सौन्दर्य–प्रकर–मकरन्दं विकिरति।
तवास्मिन् मन्दार–स्तबक–सुभगे यातु चरणे
निमज्जन् मज्जीवः करणचरणः षट्चरणताम् 90

हे जगत का पालन करने वाली माँ ! आपके चरण मन्दार पुष्प गुच्छे के समान वह कमल हैं जो दीन पुरुषों को सदा आवश्यकता के अनुसार वांछित फल देते हैं। वे नित आप की वन्दना में रत रहते हैं तथा आपके चरण कमलों को पूजते हैं। हे माँ, मेरी जीवात्मा (पांच इन्द्रियां और मन) उस छः पैर वाली मधु–मक्षिका (मधुकर) के समान हों जो सौन्दर्य–छटा और मधु–धारा को बनाने तथा पोषण वितरण विचरण करने वाली हैं।

पाद चॉनि छि स्वर्ग मन्दार पोशि गोन्दि हिय्ह
यिमन मांछ छु टपकान तुँ दीनन रछान
निर्धन भखत्यन चुँ शुबवुन बखचान
न्यथ तिम छि चॉनी पाद पूज़ान
कर दया पांछ़ यन्द्रिय तुँ मन माता
शे–ज़न्गि मांछ बोम्बरॅ हय्हू रटि हे ध्यान ।।
असि अवय ...

पदन्यास–क्रीडा–परिचय–मिवारब्धु–मनसः
स्खलन्तस्ते खेलं भवनकलहंसा न जहति
अतस्तेषां शिक्षां सुभगमणि–मञ्जीर–रणित–
च्छलादाचक्षाणं चरणकमलं चारुचरिते 91

हे मनोहर आचरण करने वाली माँ ! आपके चलने की चाल को जानने के लिए आपकी वाटिका में विचरण करने वाले राजहंस उस चाल का अभ्यास करते रहते हैं। उन को आपकी गति के पीछे–पीछे चलने में आप के चरण नूपरों की झंकार शिक्षा देने वाली प्रतीत होती हैं। उन्हें केवल एक इच्छा है कि आपकी मंद मंथर गति को प्राप्त कर सकें। आपके चलने की गति विद्या और ज्ञानमय है। इसी लिये साधक इस गति की तलाश में रहते हैं।

ही चरित्र स्वामिनी चानि वाटिकायि मंज़
राज़हंस छि सॉरीय चे़ पतुँ पतुँ पकान
तमाह छुख हेछहॅन यिछ़य चाल पकुॅनॅच
तवय रोजि छोजिनॅय हॅन्ज़ रटान त्राय
चॉजि पकुॅनॅच गति छि विद्या–ज्ञान मय
अवय साधक यहय गति छ़ारान ।।
असि अवय ...

गतास्ते मञ्चत्वं द्रुहिण–हरि–रुद्रेश्वर–भृतः
शिवः स्वच्छ–च्छाया–घटित–कपट–प्रच्छदपटः
त्वदीयानां भासां प्रतिफलन–रागारुणतया
शरीरी श्रृङ्गारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम् 92

ब्रह्मा, हरि रुद्र और ईश्वर आपके मंच के चार पाऐ तथा रक्षक हैं। उसी मंच पर स्वच्छ चादर बिछी छांता–निर्मित छाया कपट–माया रूप साक्षात शिव ही हैं, पर आपकी कान्ति के कारण वे भी अरुण वर्ण देह वाले दिखायी देते हैं। परन्तु यह कौतूहल उत्पन्न करने स्वयं श्रृंगार रस ने शरीर धारण किया है। शिव को चेतना प्रदान करने का कारण भी तो आप ही हैं।

ब्रह्मा वेष्ण रुद्र तुँ बेयि ईश्वर
चानि मंचिकँ यिम च़ोर खूरि कहार
पलङ्ग चादर सफेद कपट माया सु शिव
चानि कोंगुँ रंगुँ तीजुँ सु ति व्वशलान
अमीय व्यवहारुँ छख चुँ माता हावान
च़ॅय कारण शिव ति व्वलसावनुक ।।
असि अवय ...

**अराला केशेषु प्रकृतिसरला मन्दहसिते
शिरीषाभा चित्ते दृषदुपलशोभा कुचतटे।
भृशं तन्वी मध्ये पृथु–रुरसिजारोह–विषये
जगत्रातुं शंभो–र्जयति करुणा काचिदरुणा** 93

हे माँ ! अरुण स्वरूप में आप शिव की शक्ति हो तथा माता स्वरूप में आप जगत का कल्याण करने वाली हो। आपके केश घुंघराले हैं, मुख पर स्वभाव से ही सहज मुसकान है। शिरिष पुष्प (छुई मुई) के समान मृदुल हो। कुचमण्डल शिला की भांति कठोर तथा दृढ़ हैं। कटि अत्यन्त सूक्ष्म तथा नितम्ब भाग पुष्ट हैं । आप रक्त वर्णी अलङ्कारों से विभूषित अरुणा मयी शिवा, इसी रूप में विश्व की रक्षा करने वाली अरूण्य शक्ति हो।

**अरुणा स्वरूपा चुँ शिव सन्ज़ शखती
ज़गत कल्याणँ छख माता स्वरूप
घूंघर केश, असवुन सुन्दर म्वख छुय
मनुँ पोश ऑव्युल वछ सोठकुँ दोवँ
नोजुक कमर, सोर्ख जामुँ चॉजि मूरत
अमीय ध्यानुँ विश्व रक्षनी चुँ अरुणा ।।
असि अवय ..**

कलङ्कः कस्तूरी रजनिकर–बिम्बं जलमयं
कलाभिः कर्पूरै–र्मरकतकरण्डं निबिडितम्।
अतस्त्वद्भोगेन प्रतिदिनमिदं रिक्तकुहरं
विधिर्भूयो भूयो निबिडयति नूनं तव कृते 94

हे माँ ! चन्द्रमा की कालिमा कस्तूरी है और रजनीकर चन्द्र का जलमय बिम्ब मरकत मणि का बना हुआ कला–कर्पूर से भरा एक डिब्बा जैसा है। यह आपके सेवन–श्रृंगार की सामग्री है, जो प्रतिदिन ख़र्च होने से घटती रहती है जिसे आपके लिए ब्रह्मा जी बार–बार भरते रहते हैं। अभिप्राय यह कि जिन दो रूपों को आप धारण करती हैं वह कृष्ण–पक्ष और शुक्ल–पक्ष का बोध कराते हैं। यही कलाओं का उदय और अस्त सतोगुण और रजोगुण की प्रतीति कराते हैं।

चन्द्रमस छु दाग कस्तूरी ग्रहुन ज़न
मणि मो'खत गव्वॅरि कोफूर कलायि ज़न
चुँ छख कलायि अकि अकि लागान श्रंगारस
यलि मॅक्कलान ब्रह्मा छु अकि अकि बरान
यॅहय खसुँ–वॅसॅ कलायि स्तोगुण रजोगुण
जून–पछ तुँ गटुँ–पछ प्रखटावान ।।
असि अवय ...

पुराराते–रन्तःपुरमसि तत–स्त्वच्चरणयोः
सपर्या–मर्यादा तरलकरणाना–मसुलभा।
तथा ह्येते नीताः शतमखमुखाः सिद्विमतुलां
तव द्वारोपान्त–स्थितिभि–रणिमाद्याभि–रमराः 95

हे माँ ! आपका वास त्रिपुरारी महा प्रभु के अन्तःपुर मे है। यहाँ तक पहुँचने के लिये कठिन पूजा विधि का पालन करना पड़ता है। इन्द्रादि देवताओं की मर्यादा पूर्वक पूजा भी आपके द्वार तक ही पहुँचती है और वह सर्व सिद्धियों को पाते हैं। साधारण मानवों की बात ही नहीं उनका चित्त पूजन के समय भी सांसारिक विषयों की आरे दौड़ता रहता है। इसी कारण शान्त चिंत्त से ध्यान पूजा करना साधारण मनुष्यों के लिए उचित है। उसके लिये निष्काम भाव से पूजा रत रहना परमावश्यक है।

शिवस–अन्तः पुरस मंज़ चे बास त्रिपुरा
ओत वातुन कठिन छि पूज़ा विद्धी
इन्द्र दीवंगण ति पूज़ा कॅरि–कॅरि
बस बरस ताम वॉति लॅब्यख सिद्धीय
ज़ीव कोतॅ वाति तोतॅ यस मन चेन्चल
पज़ि, पूज़ा करॅनि निशकामुॅ तस।।
असि अवय ...

कलत्रं वैधात्रं कतिकति भजन्ते न कवयः
श्रियो देव्याः को वा न भवति पतिः कैरपि धनैः
महादेवं हित्वा तव सति सतीना–मचरमे
कुचाभ्या–मासङ्गः कुरवक–तरो–रप्यसुलभः 96

हे सती भगवती ! विष्णु ने लक्ष्मी को तथा ब्रह्मा ने सरस्वती को वरण करके जप और तप की मर्यादा स्थिर कर दी हैं। कई साधक इन्हें अपने वश में करेके धन पाते हैं अथवा विद्वान पण्डित बन जाते हैं। पर आप सतियों में श्रेष्ठ आपका कुचालिङ्गन एक श्री महादेव के अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं, कुरवक कदम्ब वृक्ष निकट होते भी नहीं पाते। केवल ज्ञान–दुग्ध रूप प्रसाद शिवा और शिव के भक्तों को ही प्राप्त होता है।

वेष्णु ब्रह्मा सन्ज़ॅ लक्ष्मी सरस्वती
कॉत्यन वश गछ़ान ज़पॅ तपुॅ सूत्य
बनान तिम छि श्रीपती तुॅ विद्या सॉमी
मगर छख चुॅ सती शिवस मंज़ शिवा
कदम्बस ति केन्ह न आलिङ्गन तॅसि शिवस
शिवा–शिव भखत्यि छि ज्ञान–द्वोद्द प्रावान ।।
असि अवय ...

गिरामाहु–र्देवीं द्रुहिणगृहिणी–मांगमविदो
हरेः पत्नीं पद्मां हरसहचरी–मद्रितनयाम्।
तुरीयाँ क्वापि त्वं दुरधिगम–निस्सीम–महिमा
महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषि 97

हे परब्रह्म–महेशानी ! अगमों के ज्ञाता ब्रह्मा की पत्नी वाग्देवी, हरि को पत्नी पद्मा को लक्ष्मी कहते हैं, हर की पतनी पार्वती कहलाती है। पर आप तो इनसे अतिरिक्त कोई चौथी ही तुरीया रूप महामाया हो। हे महामाया ! आप अपनी विचित्र लीलाओं से विश्व को चक्कर में डाल देती हो।

ही परब्रह्म महीशी महामाया
अगमा ज्ञॉनि छि वरनन करान
ब्रह्मा हरि हरस चुँ शक्ति स्वरूपुँ किन्य
वागदीवी लक्ष्मी तुँ पारवती
यिमव अपोर चुँ चूरिम तुरीया स्वरूपा
भ्रम दिवान ज़गतन महामाया ।।
असि अवय ...

कदा काले मातः कथय कलितालक्तकरसं
पिबेयं विद्यार्थी तव चरण–निर्णेजन–जलम्।
प्रकृत्या मूकानामपि च कविता–कारणतया
कदा धत्ते वाणीमुखकमल–ताम्बूल–रसताम् 98

हे माता आप के चरण–धोवन लाक्षा रस अर्थात् माहवर से लाल हो रहा है, यह ऐसा लगता है जैसे सरस्वती के मुख कमल से निकले हुए लाल पान के रस के समान है। आपके चरणोदक की महिमा इतनी महान है कि जन्म–मूक भी कवित्व शक्ति प्राप्त करता है। हे माँ ! मेरी अभिलाषा है कि इस चरणोदक (चरणामृत) के पान का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो। मैं तो विद्या का उपासक हूँ, आप दया का अपार सागर हो मेरे ऊपर भी ऐसा ही उपकार कीजिए।

चरणोदक चोन कोंग रंगॅ माता
सरस्वती ज़न चोपॅमुत व्वजुल पान
यि पादॅ अमृत कर बनि में अभिलाशा
चुँ छख वाग्दीवी दया सागरी
अथ चरणोदकस युथ बजर माता
कॅल्य ताम बनान कॅवी तु वीद वखनान ।।
असि अवय ....

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधि–हरि–सपत्नो विहरते
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा
चिरं जीवन्नेव क्षपित–पशुपाश–व्यतिकरः
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान् 99

हे माँ ! आप श्री के उपासक सरस्वती तथा लक्ष्मी को प्राप्त कर ब्रह्मा तथ विष्णु के चित्त में ईर्ष्या उत्पन्न करते हैं। उन साधकों का सौन्दर्य इतना बढ़ जाता है कि वह रति के पातिव्रत्य को भी शिथिल करने में समर्थ हो जाते हैं। वह जन्म–मरण तथा विषय भोग के बन्धनों से छूटकर दीर्घ जीवी होकर परमानन्द को भोगते, कष्टों से दूर जीवन व्यतीत करते रहते हैं। वे ब्रह्मलीन होरक आनन्दावस्था प्राप्त करते हैं।

चॉजि अनन्त साधक ही ज़गत माता
लक्ष्मी सरस्वती ति स्वॉमी बनान
रति कामदीव सॅन्ज़ तिमन पॅत लारान
सुँ वेषॅयव अपोर आनन्द प्रावान
ज़्यतॅ मरॅ वेषय–भूग खुॅरि तस नुँ पोरान
ब्रह्मलीन आनन्द अवस्था ल'बान ।।
असि अवय ...

प्रदीप–ज्वालाभि–र्दिवसकर–नीराजनविधिः
सुधासुते–श्चन्द्रोपल–जललवै–रर्ध्यरचना।
स्वकीयैरम्भोभिः सलिलि–निधि–सौहित्यकरणं
त्वदीयाभि–र्वाग्भि–स्तव जननि वाचां स्तुतिरियम् 100

हे जननि ! आप के द्वारा प्रदत्त वाक तथा मातृका शक्ति के द्वारा की गई यह मेरी अस्तुति के शब्द दीपक जलाकर भास्कर की आरती उतारना या चन्द्र कान्त मणि के जल–बिन्दुओं से चन्द्रमा को आर्घ्य देना अथवा समुद्र के जल से ही सागर को तर्पण करने के समान है। इसीलिए, हे माँ ! मुझ जैसे मानव के पास अपना कुछ है ही नहीं तो आपकी ही दी हुई वाणी से अस्तुति करने को विवश हूँ। आपके दिये हुए शब्द आपको ही अर्पण कर रहा हूँ।

मातृका शक्ति चुँ छख वागदीवी
चॉरिम शब्द तुँ कॅरम यि अस्तुती
यि गॅयि स्वॅय कथा रतनदीपॅ पूज़ बासकरस
चंन्द्रकान्त मणि चन्द्रमस आर्घ्य द्वियुन
सागरॅ ज़लुँ तरपन द्वियुन तॅथि ज़लस
मे नय केन्ह पॅनुन चे़ चॉजि शब्द चे़ अरपन ।।
असि अवय ...

समानीतः पद्भ्यां मणिमुकुरतामम्बरमणि–
भयादास्यादन्तःस्तिमितकिरणश्रेणिमसृणः।
दधाति त्वद्वक्त्रप्रतिफलनमश्रान्तविकचं
निरातङ्कं चन्द्रान्निजहृदय–पङ्केरुहमिव 101

आपके चरणों के समीप होने के कारण सूर्य आपका दर्पण बना हुआ है जिसने आपके मुख की आभा के सामने अपनी किरण–श्रेणी भीतर ही छिपा रखी है, आपके मुख मण्ड़ल का प्रतिबिम्ब उसके हृदय–कमल को प्रफुल्लित करता है। उनका रूप एकदम स्वच्छ हुआ लगातार अपने बारह रूपों में उदित होता रहा। अनाहतावस्था में भी बारह दल युक्त आपका स्वरूप रहता है। अतः चन्द्रमा का भय भी व्यर्थ है भले वह शंकर के मस्तक को शोभायमान कर रहा हो।

प्रमातुक सिर्य् चरणन तल चे़ दरपन
चानि तीजुॅ–मोखॅ, खोॅव्टुन पनुन, तीज़ अन्दर
स्वछ बुॅन्यव, हृथ–कमल फोल्योस, चानि तीज़ किन्य
न्यथ फोलवुन रुद बा'हव रूपव
चन्द्र–व्वदयुक तस न केंह भय रोज़ान
छुना अनाहतस चे़ बाह वॅथॅरू–आसन ।।
असि अवय ...

समुद्भूतस्थूलस्तनभरमुरश्चारु–हसितं
कटाक्षे कन्दर्पाः कतिचन कदम्बद्युति वपुः।
हरस्य त्वद्भ्रान्तिं मनसि जनयन्ति स्म विमला
भवत्या ये भक्ताः परिणतिरमीषामियमुमे 102

हे उमा ! जो भक्त महिलाएं मन, वचन तथा कर्म से आपकी भक्ति में विलीन हो जाती हैं वे आपकी दया से स्थूल स्तन, सम्पन्न मुख, सुन्दर आकर्षक हास्य भरा और कटाक्ष में कामदेव सी कदम्ब पुष्प समान कोमल आप जैसी ही सुन्दरता प्राप्त करती हैं। कभी–कभी उन्हें देख कर स्वयं पति भगवान शिव भी भ्रम में पड़ जाते हैं। अर्थात् साधक माता की भक्ति से आश्चर्यमय सारूप प्राप्त करते हैं।

कदावर कदम्ब हिश वॅछ थॅज़ सुन्दर
असॅवुन मॉव्ख न्यथर कामदीव तीर
निरन्तर अमीय रुपुॅ यिम ध्यान स्यद करान
तिमय दयायि चानि ततरूपता लबान
सॉमी शिवस ति तिम वुॅछिथ भ्रम लगान
आशचर्य सारुपता चॅ स्यद करान।।
असि अवय ...

निधे नित्यस्मेरे निरवधिगुणे नीतिनिपुणे
निराघाटज्ञाने नियमपर चित्तैकनिलये।
नियत्या निर्मुक्ते निखिलनिगमान्तस्तुतपदे
निरातङ्के नित्ये निगमय ममापि स्तुतिमिमाम् 103

हे नीति निपुण माँ ! हे श्रीयुक्त परम सुन्दरी! हे नित्यप्रिये! आप निरतिशय मान से उत्पन्न तथा नियम परायन साधकों के चित्तों में निवास करने वाली हो । आप नियति के सभी नियमों से परे हो । समस्त वेद–शास्त्र स्तुतियाँ आप में ही परिणत हो जाती हैं। हे निरांतक माँ ! तुम नियमों के बन्धन से मुक्त स्वतन्त्र रूप से सर्वत्र विद्यमान हो। वेद–शास्त्र मूलतः तुम्हारी ही स्तुति का पाठ करते हैं। मेरी इस अस्तुति को भी ऐसा ही वरदान प्रदारन कर ।

ही श्री, ही परम सुन्दरी, नित्यप्रिये !
ही निति निपुणे, नित्य परायनी !
साधक मनन चे़ वास ही ज़गत व्यापिनी
चुँ नियमव अपोर छख स्वतन्त्र–चालिनी
वीद शास्तरँ सॉरी चॉजि अस्तुती
म्यानि अस्तुती ति दितँ यिथुय वरदान।।
असि अवय गुल्य गंडिथ छिय प्यवान चे़य परन
गछ़ प्रसन्न असि कर अज्ञान दूर –
माता गछ़ प्रसन्न असि कर अज्ञान दूर ।।

— 0 —





ग्वरु आराधना

प्रो० ओमकारनाथ च्रंगू

ग्वरुॅ दीवॅ रोज़तम सहायतस
मन म्योन अनतन सॅ कोबॅुहस
रज़ॅ कर अमिस व्वटॅ वांदरस
मन म्योन अनतन सॅ कोबॅुहस
युथ हॉ रोज़ि ख्यल ज़न मंज़ डलस
मन म्योन अनतन सॅ कोबॅुहस

मन म्योन अन्तन सॅ कोबॅुहस
क्रालन गॅरयोनस रॅचि़ मेख्चे
ग्रटॅ कॅरमने रोटनस कचे
श्वंगरफ म्य रंग खार मंज़ मनस
मन म्योन ....

आसान छु कीमियागर ग्वरुॅय
पातर ति गॅछ़ि नेरुन शॅषिय
युथ हा वॅरि सु पानस पान तस
मन म्योन ......

ग्वरुॅ सॅन्ज़ कृपा यस रछ़ बने
ॲडुक न नेरि मंज़ मनकले
रंगॅु रंगॅु म्य करतम रंग रो'स
मन म्योन ...

मत त्रावतम व्वन अडॅवते
युथ नॅु फेरॅ येति बेयि वति वते
टिकिलिस गंडुम सॅु मनॅनिस बरस
मन म्योन अनतन सॅ कोबुहस ।।